Resource: अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

License Information

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord) (Hindi) is based on: unfoldingWord® Translation Questions, unfoldingWord, 2022, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

2CH

2 इतिहास 1:1, 2 इतिहास 1:2–5, 2 इतिहास 1:6–7, 2 इतिहास 1:8–10, 2 इतिहास 1:11, 2 इतिहास 1:12, 2 इतिहास 1:14–15, 2 इतिहास 2:1–3, 2 इतिहास 2:4–5, 2 इतिहास 2:7, 2 इतिहास 2:8–9, 2 इतिहास 2:11–12, 2 इतिहास 2:13–14, 2 इतिहास 2:16, 2 इतिहास 3:1–2, 2 इतिहास 3:3, 2 इतिहास 3:4, 2 इतिहास 3:8–9, 2 इतिहास 3:15–17, 2 इतिहास 4:1, 2 इतिहास 4:2, 2 इतिहास 4:6, 2 इतिहास 4:7, 2 इतिहास 4:12–13, 2 इतिहास 4:14–16, 2 इतिहास 4:18, 2 इतिहास 4:20, 2 इतिहास 5:1, 2 इतिहास 5:2–3, 2 इतिहास 5:4–6, 2 इतिहास 5:7–8, 2 इतिहास 5:9–10, 2 इतिहास 5:11–12, 2 इतिहास 5:13, 2 इतिहास 5:14, 2 इतिहास 6:1–2, 2 इतिहास 6:4–6, 2 इतिहास 6:7–9, 2 इतिहास 6:10–11, 2 इतिहास 6:12–13, 2 इतिहास 6:14–15, 2 इतिहास 6:16–17, 2 इतिहास 6:19–20, 2 इतिहास 6:21, 2 इतिहास 6:22–23, 2 इतिहास 6:24–25, 2 इतिहास 6:26–27, 2 इतिहास 6:28–31, 2 इतिहास 6:32–33, 2 इतिहास 6:36–39, 2 इतिहास 6:40–42, 2 इतिहास 7:1, 2 इतिहास 7:3, 2 इतिहास 7:4–5, 2 इतिहास 7:7, 2 इतिहास 7:8–10, 2 इतिहास 7:11, 2 इतिहास 7:14, 2 इतिहास 7:16, 2 इतिहास 7:17–18, 2 इतिहास 7:19–20, 2 इतिहास 7:21–22, 2 इतिहास 8:1–2, 2 इतिहास 8:6, 2 इतिहास 8:7–8, 2 इतिहास 8:9–10, 2 इतिहास 8:11, 2 इतिहास 8:12–13, 2 इतिहास 8:14, 2 इतिहास 8:14–15, 2 इतिहास 8:16, 2 इतिहास 9:1, 2 इतिहास 9:1–2, 2 इतिहास 9:3–4, 2 इतिहास 9:6, 2 इतिहास 9:8, 2 इतिहास 9:12, 2 इतिहास 9:13, 2 इतिहास 9:14, 2 इतिहास 9:16, 2 इतिहास 9:17, 2 इतिहास 9:20, 2 इतिहास 9:22–23, 2 इतिहास 9:26, 2 इतिहास 9:29–30, 2 इतिहास 10:1, 2 इतिहास 10:2, 2 इतिहास 10:3–4, 2 इतिहास 10:6–7, 2 इतिहास 10:8–9, 2 इतिहास 10:10–11, 2 इतिहास 10:12–14, 2 इतिहास 10:15, 2 इतिहास 10:16, 2 इतिहास 10:18, 2 इतिहास 11:1, 2 इतिहास 11:2–4, 2 इतिहास 11:5–10, 2 इतिहास 11:11–12, 2 इतिहास 11:13–14, 2 इतिहास 11:14–15, 2 इतिहास 11:16–17, 2 इतिहास 11:22–23, 2 इतिहास 12:1, 2 इतिहास 12:2, 2 इतिहास 12:5–6, 2 इतिहास 12:7, 2 इतिहास 12:8, 2 इतिहास 12:9, 2 इतिहास 12:12, 2 इतिहास 12:13–14, 2 इतिहास 12:16, 2 इतिहास 13:2, 2 इतिहास 13:4, 2 इतिहास 13:7, 2 इतिहास 13:8, 2 इतिहास 13:10, 2 इतिहास 13:12, 2 इतिहास 13:13, 2 इतिहास 13:18, 2 इतिहास 13:20, 2 इतिहास 14:2–3, 2 इतिहास 14:5–6, 2 इतिहास 14:7, 2 इतिहास 14:9–11, 2 इतिहास 14:12, 2 इतिहास 14:14, 2 इतिहास 15:1–2, 2 इतिहास 15:3, 2 इतिहास 15:5, 2 इतिहास 15:6, 2 इतिहास 15:8, 2 इतिहास 15:9, 2 इतिहास 15:12, 2 इतिहास 15:13, 2 इतिहास 15:15, 2 इतिहास 15:17, 2 इतिहास 15:19, 2 इतिहास 16:1, 2 इतिहास 16:2–3, 2 इतिहास 16:3, 2 इतिहास 16:4–6, 2 इतिहास 16:7–8, 2 इतिहास 16:9, 2 इतिहास 16:10, 2 इतिहास 16:12, 2 इतिहास 16:14, 2 इतिहास 17:2, 2 इतिहास 17:3, 2 इतिहास 17:4, 2 इतिहास 17:6, 2 इतिहास 17:9, 2 इतिहास 17:10, 2 इतिहास 17:12, 2 इतिहास 17:16, 2 इतिहास 17:17, 2 इतिहास 18:1, 2 इतिहास 18:4, 2 इतिहास 18:7, 2 इतिहास 18:11, 2 इतिहास 18:12, 2 इतिहास 18:16, 2 इतिहास 18:18, 2 इतिहास 18:19, 2 इतिहास 18:21, 2 इतिहास 18:22, 2 इतिहास 18:26, 2 इतिहास 18:27, 2 इतिहास 18:30, 2 इतिहास 18:32, 2 इतिहास 18:34, 2 इतिहास 19:3, 2 इतिहास 19:5, 2 इतिहास 19:6, 2 इतिहास 19:9, 2 इतिहास 19:10, 2 इतिहास 19:11, 2 इतिहास 20:1, 2 इतिहास 20:4, 2 इतिहास 20:5, 2 इतिहास 20:9, 2 इतिहास 20:10, 2 इतिहास 20:13, 2 इतिहास 20:15, 2 इतिहास 20:17, 2 इतिहास 20:18, 2 इतिहास 20:21, 2 इतिहास 20:22, 2 इतिहास 20:24, 2 इतिहास 20:25, 2 इतिहास 20:27, 2 इतिहास 20:30, 2 इतिहास 20:32, 2 इतिहास 20:37, 2 इतिहास 21:3, 2 इतिहास 21:4, 2 इतिहास 21:7, 2 इतिहास 21:10, 2 इतिहास 21:11, 2 इतिहास 21:15, 2 इतिहास 21:17, 2 इतिहास 21:19, 2 इतिहास 22:3, 2 इतिहास 22:4, 2 इतिहास 22:6, 2 इतिहास 22:7, 2 इतिहास 22:9, 2 इतिहास 22:10, 2 इतिहास 22:12, 2 इतिहास 23:3, 2 इतिहास 23:4, 2 इतिहास 23:7, 2 इतिहास 23:8, 2 इतिहास 23:11, 2 इतिहास 23:12, 2 इतिहास 23:13, 2 इतिहास 23:14, 2 इतिहास 23:16, 2 इतिहास 23:19, 2 इतिहास 23:20, 2 इतिहास 24:2, 2 इतिहास 24:5, 2 इतिहास 24:7, 2 इतिहास 24:8, 2 इतिहास 24:10, 2 इतिहास 24:11, 2 इतिहास 24:13, 2 इतिहास 24:16, 2 इतिहास 24:19, 2 इतिहास 24:20, 2 इतिहास 24:22, 2 इतिहास 24:24, 2 इतिहास 24:25, 2 इतिहास 25:1, 2 इतिहास 25:2, 2 इतिहास 25:3–4, 2 इतिहास 25:5–6, 2 इतिहास 25:7, 2 इतिहास 25:8, 2 इतिहास 25:9, 2 इतिहास 25:10, 2 इतिहास 25:11, 2 इतिहास 25:12, 2 इतिहास 25:13, 2 इतिहास 25:14, 2 इतिहास 25:15, 2 इतिहास 25:16, 2 इतिहास 25:17, 2 इतिहास 25:18–19, 2 इतिहास 25:20, 2 इतिहास 25:21–22, 2 इतिहास 25:23–24, 2 इतिहास 25:25, 2 इतिहास 25:26, 2 इतिहास 25:27, 2 इतिहास 25:27–28, 2 इतिहास 26:1, 2 इतिहास 26:2, 2 इतिहास 26:4–5, 2 इतिहास 26:5, 2 इतिहास 26:6–8, 2 इतिहास 26:9–10, 2 इतिहास 26:10, 2 इतिहास 26:11, 2 इतिहास 26:13, 2 इतिहास 26:14–15, 2 इतिहास 26:15, 2 इतिहास 26:16, 2 इतिहास 26:17–18, 2 इतिहास 26:19, 2 इतिहास 26:20, 2 इतिहास 26:21, 2 इतिहास 26:23, 2 इतिहास 27:1, 2 इतिहास 27:2, 2 इतिहास 27:3, 2 इतिहास 27:4, 2 इतिहास 27:5, 2 इतिहास 27:6, 2 इतिहास 27:9, 2 इतिहास 27:9 (#2), 2 इतिहास 28:1, 2 इतिहास 28:2, 2 इतिहास 28:3, 2 इतिहास 28:5–6, 2 इतिहास 28:8, 2 इतिहास 28:9, 2 इतिहास 28:9 (#2), 2

इतिहास 28:10–11, 2 इतिहास 28:13, 2 इतिहास 28:14–15, 2 इतिहास 28:16–18, 2 इतिहास 28:19, 2 इतिहास 28:21, 2 इतिहास 28:22–23, 2 इतिहास 28:24, 2 इतिहास 28:24–25, 2 इतिहास 28:26, 2 इतिहास 28:27, 2 इतिहास 29:1–2, 2 इतिहास 29:3–5, 2 इतिहास 29:6, 2 इतिहास 29:6–7, 2 इतिहास 29:8, 2 इतिहास 29:9, 2 इतिहास 29:10, 2 इतिहास 29:15, 2 इतिहास 29:16, 2 इतिहास 29:17, 2 इतिहास 29:18–19, 2 इतिहास 29:20–21, 2 इतिहास 29:22–24, 2 इतिहास 29:25, 2 इतिहास 29:27–28, 2 इतिहास 29:30, 2 इतिहास 29:31, 2 इतिहास 29:32–33, 2 इतिहास 29:34, 2 इतिहास 29:35–36, 2 इतिहास 30:1, 2 इतिहास 30:1 (#2), 2 इतिहास 30:2, 2 इतिहास 30:3, 2 इतिहास 30:4, 2 इतिहास 30:5, 2 इतिहास 30:5 (#2), 2 इतिहास 30:5 (#3), 2 इतिहास 30:6, 2 इतिहास 30:9, 2 इतिहास 30:10, 2 इतिहास 30:11, 2 इतिहास 30:12, 2 इतिहास 30:13, 2 इतिहास 30:14–15, 2 इतिहास 30:15, 2 इतिहास 30:16, 2 इतिहास 30:17, 2 इतिहास 30:18–19, 2 इतिहास 30:20, 2 इतिहास 30:21, 2 इतिहास 30:22, 2 इतिहास 30:23–24, 2 इतिहास 30:25, 2 इतिहास 30:26, 2 इतिहास 30:27, 2 इतिहास 31:1, 2 इतिहास 31:1 (#2), 2 इतिहास 31:2, 2 इतिहास 31:3, 2 इतिहास 31:4, 2 इतिहास 31:5, 2 इतिहास 31:6, 2 इतिहास 31:7, 2 इतिहास 31:8, 2 इतिहास 31:9–10, 2 इतिहास 31:11–12, 2 इतिहास 31:12, 2 इतिहास 31:16, 2 इतिहास 31:17, 2 इतिहास 31:18, 2 इतिहास 31:19, 2 इतिहास 31:20, 2 इतिहास 31:21, 2 इतिहास 32:1, 2 इतिहास 32:2–4, 2 इतिहास 32:5, 2 इतिहास 32:6–8, 2 इतिहास 32:9–10, 2 इतिहास 32:11, 2 इतिहास 32:13–14, 2 इतिहास 32:14–15, 2 इतिहास 32:16–17, 2 इतिहास 32:18, 2 इतिहास 32:20–21, 2 इतिहास 32:21, 2 इतिहास 32:22–23, 2 इतिहास 32:24–26, 2 इतिहास 32:27–29, 2 इतिहास 32:30–31, 2 इतिहास 32:32, 2 इतिहास 33:1–3, 2 इतिहास 33:6, 2 इतिहास 33:7, 2 इतिहास 33:10–11, 2 इतिहास 33:12–13, 2 इतिहास 33:14–15, 2 इतिहास 33:17, 2 इतिहास 33:18, 2 इतिहास 33:21–23, 2 इतिहास 33:24, 2 इतिहास 34:1–3, 2 इतिहास 34:4–5, 2 इतिहास 34:6–7, 2 इतिहास 34:8–9, 2 इतिहास 34:10–11, 2 इतिहास 34:12–13, 2 इतिहास 34:14, 2 इतिहास 34:19, 2 इतिहास 34:25, 2 इतिहास 34:26–28, 2 इतिहास 34:29–30, 2 इतिहास 34:31–32, 2 इतिहास 34:33, 2 इतिहास 35:1–2, 2 इतिहास 35:3, 2 इतिहास 35:6, 2 इतिहास 35:11–12, 2 इतिहास 35:16–17, 2 इतिहास 35:18, 2 इतिहास 35:20–21, 2 इतिहास 35:22, 2 इतिहास 35:23–24, 2 इतिहास 35:25, 2 इतिहास 35:26–27, 2 इतिहास 36:1–2, 2 इतिहास 36:3–4, 2 इतिहास 36:5, 2 इतिहास 36:6, 2 इतिहास 36:7, 2 इतिहास 36:8, 2 इतिहास 36:9, 2 इतिहास 36:10, 2 इतिहास 36:12, 2 इतिहास 36:13, 2 इतिहास 36:15–16, 2 इतिहास 36:17, 2 इतिहास 36:18–19, 2 इतिहास 36:20–21, 2 इतिहास 36:22–23

2 इतिहास 1:1

दाऊद के पुत्र सुलैमान को उनके राज्य में स्थिर क्यों किया गया?

सुलैमान अपने राज्य में स्थिर थे क्योंकि यहोवा उनके संग थे और उन्हें बहुत ही बढ़ाया।

2 इतिहास 1:2–5

जब सुलैमान गिबोन के ऊँचे स्थान पर परमेश्वर का मिलापवाला तम्बू में गए, तो आराधना के लिए कौन-कौन सी वस्तुएं उपलब्ध थीं?

वहाँ मिलापवाला तम्बू था जिसे मूसा ने जंगल में बनाया था, और पीतल वेदी था जिसे बसलेल ने बनाया था, परन्तु परमेश्वर के सन्दूक को किर्यत्यारीम से यरूशलेम में एक तम्बू ले आया गया था।

2 इतिहास 1:6–7

सुलैमान ने क्या किया था इससे पहले कि यहोवा ने उनसे पूछा, "जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ, वह माँग"?

सुलैमान ने वहीं उस पीतल की वेदी के पास जाकर, उस पर एक हजार होमबलि चढ़ाए।।

2 इतिहास 1:8–10

सुलैमान ने यहोवा से उन्हें बुद्धि और ज्ञान देने के लिए क्यों प्रार्थना की?

सुलैमान ने यहोवा से प्रार्थना की कि वे उन्हें बुद्धि और ज्ञान प्रदान करें ताकि वे इस्राएल के प्रजा के न्याय कर सकें, जो संख्या में बड़ी थी।

2 इतिहास 1:11

परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि और ज्ञान क्यों प्रदान किया?

परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि और ज्ञान दिया क्योंकि उन्होंने धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य, अपने अपने बैरियों का प्राण या अपने लिए दीर्घायु नहीं माँगी, बल्कि अपने प्रजा पर न्याय करने के लिए परमेश्वर की सहायता माँगी।

2 इतिहास 1:12

परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि और ज्ञान के साथ और क्या प्रदान किया?

परमेश्वर ने सुलैमान को वह दिया जो उन्होंने नहीं माँगी था: धन-सम्पत्ति, और उनसे पहले के किसी भी राजा से अधिक ऐश्वर्य भी दिया।

2 इतिहास 1:14–15

सुलैमान की संपत्ति किन तरीकों से सभी के द्वारा देखी जाती थी?

सुलैमान के चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार थे। उनके राज्य में सोने-चाँदी का मूल्य बहुतायत के कारण पत्थरों का सा, और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरों का सा बना दिया।

2 इतिहास 2:1–3

सुलैमान ने हीराम से देवदार भेजने का अनुरोध क्यों किया, जैसा कि उन्होंने उनके पिता दाऊद के लिए किया था?

सुलैमान ने हीराम से देवदार की लकड़ियाँ भेजने का अनुरोध किया ताकि वह यहोवा के नाम के लिए एक भवन और अपने राज्य के लिए एक राजभवन बना सकें।

2 इतिहास 2:4–5

सुलैमान ने यहोवा के नाम के लिए एक भवन बनाने की योजना क्यों बनाई?

सुलैमान ने यहोवा के नाम के लिए एक बड़ा भवन बनाने की योजना बनाई क्योंकि उनके परमेश्वर सब देवताओं में महान है।

2 इतिहास 2:7

सुलैमान को यहोवा के नाम के लिए एक ऐसा भवन बनाने के लिए किनकी आवश्यकता थी जो यहोवा की महानता को दर्शाए?

सुलैमान को एक ऐसा मनुष्य की आवश्यकता थी जो सोने, चाँदी, पीतल, लोहे और बैंगनी, लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो।

2 इतिहास 2:8–9

सुलैमान क्यों चाहते थे कि हीराम उन्हें लबानोन से देवदार, सनोवर और चन्दन के लकड़ी भेजें?

सुलैमान चाहते थे कि हीराम इन लकड़ी को उनके पास भेजें ताकि वह भवन, जो वे यहोवा के नाम के लिए बनाएंगे, वह बड़ा और अचम्भे के योग्य होगा।

2 इतिहास 2:11–12

हीराम के अनुसार, यहोवा ने सुलैमान को इस्राएल के प्रजा का राजा क्यों नियुक्त किया?

हीराम के अनुसार, यहोवा ने सुलैमान को राजा बनाया क्योंकि यहोवा अपने प्रजा से प्रेम रखते थे और सुलैमान को बुद्धि और समझ का वरदान मिला था।

2 इतिहास 2:13–14

हीराम ने सुलैमान के पास हूरामाबी को क्यों भेजा?

हीराम ने हूरामाबी को भेजा क्योंकि वह सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर, लकड़ी, बैंगनी और नीले और लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम, और सब प्रकार की नक्काशी को जानता और सब भाँति की कारीगरी बना सकता है।

2 इतिहास 2:16

लेबनान से लकड़ी को इस्राएल ले जाना कैसे संभव था?

लेबनान से लकड़ी को बेड़े बनवाकर समुद्र के मार्ग से इस्राएल के लिए याफा तक लाया गया और फिर यरूशलेम तक पहुँचाया गया।

2 इतिहास 3:1–2

सुलैमान ने यहोवा का भवन ओर्नान यबूसी के खलिहान पर मोरिय्याह पहाड़ पर क्यों बनवाना आरंभ किया?

सुलैमान ने यहोवा का भवन वहाँ बनाना शुरू किया क्योंकि वहीं यहोवा ने उनके पिता दाऊद को दर्शन दिए थे।

2 इतिहास 3:3

सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के लिए जो नींव रखी थी, उसकी नाप क्या थी?

परमेश्वर के भवन की नींव की नाप प्राचीनकाल के नाप के अनुसार साठ हाथ, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की थी।

2 इतिहास 3:4

भवन के सामने के ओसारे की कितना ऊँचा था?

ओसारे की ऊँचाई एक सौ बीस हाथ की थी।

2 इतिहास 3:8–9

परमपवित्र स्थान को ढकने के लिए क्या उपयोग किया गया था?

परमपवित्र स्थान को शुद्ध सोने से मढ़वाया गया था।

2 इतिहास 3:15–17

सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के सामने दो खम्भे पर क्या स्थापित किया?

सुलेमान ने उन खम्भों के ऊपर एक सौ अनार भी बनाकर साँकलों पर लटकाए।

2 इतिहास 4:1

पीतल की वेदी के माप क्या थे?

पीतल की वेदी की लम्बाई और चौड़ाई बीस-बीस हाथ की और ऊँचाई दस हाथ की थी।

2 इतिहास 4:2

ढले हुए गोल हौद कितना विशाल था?

ढले हुए गोल हौद एक किनारे से दूसरे किनारे तक दस हाथ तक चौड़ा था, और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ की थी, और उसके चारों ओर का घेर तीस हाथ के नाप का था।

2 इतिहास 4:6

सुलैमान द्वारा भवन के लिए बनाए गए हौद का उद्देश्य क्या था?

हौद याजकों के धोने हेतु था।

2 इतिहास 4:7

सुलैमान को सोने की दस दीवट बनाने की विधि कैसे आती थी?

सुलैमान ने सोने की दस दीवट उनके विधि के अनुसार बनाए।

2 इतिहास 4:12–13

राजा सुलैमान के लिए हूराम ने परमेश्वर के भवन में कौन-कौन से कार्य पूरे किए?

हूराम ने दो खम्भों, गोलों, जालियों की दो-दो पंक्ति और चार सौ अनार का कार्य पूरा किया।

2 इतिहास 4:14–16

हूरामाबी ने राजा सुलैमान के लिए यहोवा के भवन के लिए झलकाए हुए पीतल से क्या-क्या बनवाए?

हूराम-अबी ने हण्डों, फावड़ियों, काँटों और इनके सब सामान को यहोवा के भवन के लिये राजा सुलैमान की आज्ञा से झलकाए हुए पीतल के बनवाए।

2 इतिहास 4:18

सुलैमान द्वारा बनाए गए सब पात्र के लिए पीतल के तौल कितना था?

सुलैमान द्वारा बनाए गए पीतल के सब पात्र का तौल का हिसाब न था।

2 इतिहास 4:20

वे दीपकों समेत शुद्ध सोने की दीवटें, जो भीतरी कोठरी के सामने जलने के लिए बनाए गए थे, किस चीज के बने थे?

दीपकों समेत दीवटें शुद्ध सोने से बने थे।

2 इतिहास 5:1

सुलैमान ने उन पात्रों को कहाँ रखा जिन्हें दाऊद ने परमेश्वर के लिए पवित्र किया था?

सुलैमान ने सोने, चाँदी और सब पात्रों को भीतर पहुँचाकर परमेश्वर के भवन के भण्डारों में रखवा दिया।

2 इतिहास 5:2–3

सुलैमान ने आगे क्या करने का निश्चय किया?

सुलैमान ने इस्राएल के पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष को इस उद्देश्य से इकट्ठा किया कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर से अर्थात् सिय्योन से ऊपर ले आएँ।

2 इतिहास 5:4–6

जब लेवियों ने वाचा का सन्दूक उठाया, तब राजा सुलैमान और सब इस्राएली मण्डली के लोग ने क्या किया?

राजा सुलैमान और सब इस्राएली मण्डली के लोग उसके पास इकट्ठा हुए थे और उन्होंने सन्दूक के सामने इतने भेड़ और बैल बलि किए।

2 इतिहास 5:7–8

याजकों ने यहोवा की वाचा के सन्दूक को कहाँ रखा?

याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है, पहुँचाकर, करूबों के पंखों के तले रख दिया।

2 इतिहास 5:9–10

वाचा के सन्दूक में कौन-कौन सी वस्तुएं थीं?

वाचा के सन्दूक में पत्थर की उन दो पटियाओं को छोड़ कुछ न था, जिन्हें मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखा।

2 इतिहास 5:11–12

जब याजक पवित्रस्थान से बाहर आए, तो सभी लेवियों ने क्या किया?

लेवी, सन के वस्त्र पहने झाँझ, सारंगियाँ और वीणाएँ लिये हुए, वेदी के पूर्व की ओर खड़े थे।

2 इतिहास 5:13

तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले यहोवा की स्तुति कैसे करते थे?

तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे और गा रहे थे, “वह भला है और उसकी करुणा सदा की है।”

2 इतिहास 5:14

याजक सेवा-टहल करने को खड़े क्यों नहीं रह सके?

याजक नहीं रह सके क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।

2 इतिहास 6:1–2

सुलैमान ने उस स्थान को कैसे बनाया जहाँ यहोवा वास करेंगे?

यहोवा ने कहा था कि वे घोर अंधकार में वास करेंगे, लेकिन सुलैमान ने उनके लिए एक दृढ़ स्थान बनाया है जिसमें वे युग-युग वास करेंगे।

2 इतिहास 6:4–6

यहोवा ने अंततः कहाँ वास करने का निर्णय लिया और इस्राएल पर प्रधान होने के लिए किसे चुना?

यहोवा ने पहले कोई नगर नहीं चुना था जिसमें वेनिवास के लिये भवन बनाएं और न ही इस्राएल पर प्रधान होने के लिए किसी पुरुष को चुना था, लेकिन बाद में उन्होंने यरूशलेम को अपने निवास के लिए और दाऊद को इस्राएल पर प्रधान होने के लिए चुना।

2 इतिहास 6:7–9

यहोवा ने दाऊद से क्या कहा ताकि वे उसके हृदय की इच्छा को पूरा करने से रोक सकें?

यहोवा ने दाऊद से कहा था, "तेरी जो इच्छा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी इच्छा करके तूने भला तो किया; तो भी तू उस भवन को बनाने न पाएगा: तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा।'

2 इतिहास 6:10–11

यहोवा ने जो वचन कहा था, उसे कैसे पूरा किया?

यहोवा ने सुलैमान को दाऊद के सिंहासन पर बैठाकर वह वचन पूरा किया जो उन्होंने कहा था, जिसने यहोवा के नाम के लिए भवन बनवाया, और उसमें सन्दूक को रखवाया।

2 इतिहास 6:12–13

सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने कैसे खड़े हुए?

सुलैमान एक पीतल की एक चौकी पर खड़े हुए, और सारे इस्राएल की सभा के सामने घुटने टेककर, अपने हाथ आकाश की ओर फैलाए।

2 इतिहास 6:14–15

यहोवा उन दास के लिए क्या करते हैं जो अपने सारे मन से उनके सम्मुख चलते हैं?

यहोवा अपने दास के साथ वाचा करते हैं और उन लोगों के प्रति करुणा करते हैं जो अपने सारे मन से उनके सम्मुख चलते हैं।

2 इतिहास 6:16–17

यहोवा ने अपने दास दाऊद से क्या वादा किया?

यहोवा ने दाऊद से कहा कि अगर उनके वंश यहोवा की व्यवस्था में चलने के लिए चौकसी करें, तो उनके कुल से कोई इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे।

2 इतिहास 6:19–20

सुलैमान ने यहोवा से कौन सी प्रमुख प्रार्थना की थी?

सुलैमान ने यहोवा से प्रार्थना की कि वे उसकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर ध्यान दे ताकि उनकी आँखें इस भवन की ओर रात-दिन खुली रहें।

2 इतिहास 6:21

सुलैमान और इस्राएल के प्रजा की प्रार्थनाओं को सुनने के बाद सुलैमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर से क्या चाहते थे?

सुलैमान यहोवा से क्षमा प्राप्त करने की इच्छा रखते थे।

2 इतिहास 6:22–23

यदि एक निर्दोष पर दूसरे के विरुद्ध अपराध का आरोप लगाया गया हो, तो उसे निर्दोष कैसे ठहराया जा सकता है?

एक निर्दोष को यहोवा के भवन में वेदी के सामने शपथ लेकर निर्दोष ठहराया जा सकता था।

2 इतिहास 6:24–25

जब इस्राएल के लोग यहोवा के विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, तो उन्हें क्या करना चाहिए था?

इस्राएल के लोगों को यहोवा की ओर फिरने के लिए उनके नाम को मानना, प्रार्थना करना, और भवन में उनके सामने क्षमा की याचना करनी थी।

2 इतिहास 6:26–27

जब आकाश इतना बन्द हो जाए कि वर्षा न हो क्योंकि इस्राएल के लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, तो उन्हें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

इस्राएल के लोग भवन की ओर प्रार्थना करें, यहोवा के नाम को मानें, और अपने पाप से फिरें ताकि उनकी भूमि पर वर्षा हो सके।

2 इतिहास 6:28–31

ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ थीं जब इस्राएल के लोगों को यहोवा से अपनी प्रार्थनाएँ सुनने और अपने पापों के लिए क्षमा मांगने की आवश्यकता थी?

इस्राएल के लोगों को यहोवा की आवश्यकता थी कि वे उनकी प्रार्थनाओं को सुनें जब अकाल, मरी, झुलसा या गेरुई, टिड्डियाँ या कीड़े लगें, जब शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें घेर रखें या कोई विपत्ति या रोग हो।

2 इतिहास 6:32–33

जब कोई परदेशी यहोवा के भवन की ओर आकर प्रार्थना करता है, तो यहोवा उनके अनुरोध को क्यों पूरा करेंगे?

यहोवा वह पूरा करेंगे जो परदेशी उनसे मांगे ताकि पृथ्वी के सब देशों के लोग यहोवा के नाम को जान सकें, उनसे भय मानें सकें, और उस भवन को जान सकें जो उनके नाम से कहलाता है।

2 इतिहास 6:36–39

सुलैमान ने यहोवा से क्या प्रार्थना की?

सुलैमान ने यहोवा से प्रार्थना की कि वह इस्राएल के लोगों के पाप अंगीकार को सुनें और उन्हें क्षमा करें, क्योंकि उन्होंने पाप किया था, उन्हें अपने शत्रुओं की भूमि पर बन्दी बना लिया गया था, और उन्होंने अपने पापों का पश्चाताप किया था।

2 इतिहास 6:40–42

सुलैमान यहोवा से क्या चाहते थे?

सुलैमान चाहते थे कि यहोवा लोगों की प्रार्थनाओं पर अपने कान लगाए, अपने याजक उद्धाररूपी वस्त्र पहने रहें, और उनके भक्त लोग भलाई के कारण आनन्द करते रहें।

2 इतिहास 7:1

जब सुलैमान यहोवा से अपनी प्रार्थना कर चुका, तब क्या हुआ?

जब सुलैमान ने अपनी प्रार्थना कर चुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों तथा अन्य बलियों को भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर गया।

2 इतिहास 7:3

जब आग गिरी और यहोवा का तेज भवन पर छा गया, तब सब इस्राएली की प्रतिक्रिया क्या थी?

इस्राएल के लोगों ने फर्श पर झुककर अपना-अपना मुँह भूमि की ओर किए हुए दण्डवत् किया, और यहोवा का धन्यवाद किया।

2 इतिहास 7:4–5

सब प्रजा समेत राजा ने यहोवा को बलिदान क्यों चढ़ाया?

पूरी प्रजा समेत राजा ने बलि चढ़ाया और यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की।

2 इतिहास 7:7

सुलैमान ने भवन के सामने आँगन के बीच में होमबलि और मेलबलियों की चर्बी क्यों चढ़ाई?

सुलैमान ने भवन के सामने आँगन के बीच में होमबलि और मेलबलियों की चर्बी चढ़ाई क्योंकि सुलैमान की बनाई हुई पीतल की वेदी होमबलि और अन्नबलि और चर्बी के लिये छोटी थी।

2 इतिहास 7:8–10

सुलैमान पर्व के बाद इस्राएल के लोगों को आनन्दित हृदय के साथ अपने-अपने डेरे को क्यों भेजने में सक्षम थे?

पर्व के बाद इस्राएल के लोगों को आनन्दित हृदय के साथ सुलैमान द्वारा भेजा गया क्योंकि यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और अपनी प्रजा इस्राएल पर भलाई दिखाई थी।

2 इतिहास 7:11

यहोवा के भवन और अपने भवन में सुलैमान ने क्या किया?

यहोवा के भवन में और अपने भवन में जो कुछ उसने बनाना चाहा, उसमें उसका मनोरथ पूरा हुआ।

2 इतिहास 7:14

इस्राएल के लोगों के लिए यहोवा को उनकी प्रार्थना सुनने, उनके पाप क्षमा करने और उनके देश को ज्यों का त्यों करने के लिए क्या करना आवश्यक था?

वे प्रजा के लोग जो परमेश्वर के कहलाते हैं, उन्हें स्वयं को दीन करना, प्रार्थना करना, यहोवा का दर्शन के खोजी और अपनी बुरी चाल से मुड़ना आवश्यक है।

2 इतिहास 7:16

यहोवा ने अपने भवन को क्यों अपनाया और पवित्र किया?

यहोवा ने अपने भवन को अपनाया और पवित्र किया ताकि उनका नाम सदा के लिये इसमें बना रहे।

2 इतिहास 7:17–18

यहोवा ने इस्राएल के लोगों के लिए कौन-कौन सी विधियों और नियमों को रखीं ताकि दाऊद के वंशज हमेशा उनके राज्य के राजगद्दी को स्थिर रखें?

यहोवा ने कहा कि इस्राएल के लोगों को जो उन्होंने उन्हें आज्ञा दी हैं उस पर चलते रहे और उनके विधियों और नियमों को मानता रहे।

2 इतिहास 7:19–20

यदि इस्राएल के लोग यहोवा की विधियों और आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे और पराए देवताओं की उपासना करेंगे, तो क्या होगा?

यदि इस्राएल के लोग यहोवा की विधियों और आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे और पराए देवताओं की उपासना करेंगे, तो वह उन्हें उनको अपने देश में से जो उन्होंने उन्हें दी थी उखाड़ देंगे और उस भवन को जिसे उन्होंने अपने नाम के लिये पवित्र किया था, और उन्हें देश-देश के लोगों के बीच उसकी उपमा और नामधराई चलेगी।

2 इतिहास 7:21–22

उन लोगों को क्या जवाब दी गयी जो भवन के पास से आते-जाते चकित हुए कि यहोवा ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्यों किया है?

जवाब यह होगा कि उन लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उनको मिस्र देश से निकाल लाया था, त्याग कर पराए देवताओं को ग्रहण किया, और उन्हें दण्डवत् की और उनकी उपासना की, इस कारण उसने यह सब विपत्ति उन पर डाली है।

2 इतिहास 8:1–2

सुलैमान ने यहोवा के भवन और अपने भवन के बनाने में समय क्या किया?

उस समय के दौरान जब सुलैमान ने यहोवा के भवन और अपने भवन बनाया, तब वह उन नगरों को दृढ़ कर रहे थे जो हीराम ने उन्हें दिए थे, और उन्होंने इस्राएल के लोगों को वहाँ बसाया।

2 इतिहास 8:6

सामान्यतः सुलैमान ने कहाँ और किस उद्देश्य से निर्माण कराया था?

जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और अपने राज्य के सब देश में बनाना चाहा, उन सब को बनाया।

2 इतिहास 8:7–8

उन देश के लोगों का क्या हुआ जो इस्राएल के न थे?

सुलैमान ने उन लोगों को, जो इस्राएल के नहीं थे, उनमें से तो बहुतों को सुलैमान ने बेगार में रखा।

2 इतिहास 8:9–10

सुलैमान ने इस्राएल के लोगों को कौन-कौन से कार्य नियुक्त किए?

सुलैमान ने इस्राएल के लोगों में से अपने योद्धा, हाकिम, सरदार, रथों और सवारों के प्रधान नियुक्त किए।

2 इतिहास 8:11

सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस भवन में क्यों लाया जो उन्होंने उसके लिए बनाया था?

सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस भवन में ले आए, क्योंकि यहोवा का सन्दूक शहर में था और इसलिए यह एक पवित्र स्थान था।

2 इतिहास 8:12–13

सुलैमान ने ओसारे के सामने बनाई गई वेदी पर यहोवा को होमबलि कैसे चढ़ाई?

सुलैमान ने मूसा की आज्ञा और प्रतिदिन के नियम के अनुसार, यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाए।

2 इतिहास 8:14

याजकों और लेवियों की जिम्मेदारियाँ क्या थीं?

याजकों और लेवियों को सुलैमान द्वारा उनके कामों पर ठहराया गया था ताकि वे परमेश्वर की स्तुति कर सकें और याजकों के सामने सेवा-टहल किया करें।

2 इतिहास 8:14–15

अपने कर्तव्यों का पालन करने में फाटक के पास के द्वारपाल कितने निष्ठावान थे?

राजा के आज्ञा के अनुसार द्वारपालों ने किसी भी मामले में याजकों और लेवियों को जो-जो आज्ञा दी थी, उन्होंने उसे न टाला।

2 इतिहास 8:16

सुलैमान के द्वारा यहोवा के भवन के सभी काम पूरे होने का संकेत क्या था?

यहोवा के भवन पूरी तरह से तैयार हो गया और उपयोग में लाया गया।

2 इतिहास 9:1

शेबा की रानी यरूशलेम क्यों आईं?

शेबा की रानी यरूशलेम आईं क्योंकि उन्होंने सुलैमान की कीर्ति सुनी और वह कठिन-कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करना चाहती थीं।

2 इतिहास 9:1–2

जब शेबा की रानी ने सुलैमान से अपने मन की सब बातों के विषय बातें की, तो सुलैमान ने क्या उत्तर दिया?

सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसे न बता सके।

2 इतिहास 9:3–4

जब शेबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी, उनके पास मौजूद भवन, भोजन, वस्त्र और कर्मचारी को देखा, तो उनकी प्रतिक्रिया क्या थी?

जब शेबा की रानी ने सुलैमान की सभी संपत्तियाँ देखीं, तब वह चकित हो गई।

2 इतिहास 9:6

शेबा की रानी ने राजा सुलैमान के बारे में क्या आकलन किया?

शेबा की रानी ने राजा सुलैमान से कहा कि उनकी बुद्धि और कीर्ति की आधी बड़ाई भी उसने बताई नहीं गई थी।

2 इतिहास 9:8

शीबा की रानी ने सुलैमान को यह याद दिलाने के लिए क्या कहा कि वह इस्राएल के राजा के रूप में राजगद्दी पर किस कारण विराजमान हुए?

शेबा की रानी ने सुलैमान को यह याद दिलाया कि यहोवा ने उन्हें इस्राएल का राजा बनाया था और उन्हें राजगद्दी पर इसलिए विराजमान किया क्योंकि यहोवा इस्राएल से प्रेम करते हैं और उन्हें सदा के लिये स्थिर करना चाहते हैं।

2 इतिहास 9:12

रानी शेबा की राजा सुलैमान से मिलने की यात्रा का परिणाम क्या हुआ?

शेबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उसको उसकी इच्छा के अनुसार दिया; यह उससे अधिक था, जो वह राजा के पास ले आई थी। तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई।

2 इतिहास 9:13

प्रतिवर्ष सुलैमान के पास कितना सोना आता था?

जो सोना प्रतिवर्ष सुलैमान के पास पहुँचा करता था, उसका तौल छः सौ छियासठ किक्कार था।

2 इतिहास 9:14

सुलैमान के पास सोना-चाँदी कौन लाए?

सौदागर,व्यापारी, अरब देश के सब राजा और देश के अधिपति भी सुलैमान के पास सोना-चाँदी लाते थे।

2 इतिहास 9:16

सुलैमान ने कितनी सोने की ढालें गढ़ाकर बनवाईं थीं?

राजा सुलैमान ने तीन सौ छोटी ढालें सोना गढ़ाकर बनवाईं।

2 इतिहास 9:17

राजा सुलैमान का सिंहासन किससे बनाया था?

राजा सुलैमान का सिंहासन हाथी दाँत से बनाया था और वह शुद्ध सोने से मढ़ाया हुआ था।

2 इतिहास 9:20

राजा सुलैमान के पीने के किसी भी पात्र चाँदी के क्यों नहीं बने थे?

राजा सुलैमान के किसी भी पीने के पात्र चाँदी के नहीं बने थे क्योंकि सुलैमान के दिनों में चाँदी का कोई मूल्य न था।

2 इतिहास 9:22–23

पृथ्वी के सब ने सुलैमान का दर्शन करना क्यों चाहते थे?

उनके धन के कारण, और उनकी वह बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उपजाई थीं, पृथ्वी के सब सुलैमान का दर्शन करना चाहते थे।

2 इतिहास 9:26

सुलैमान ने किन-किन राजाओं पर प्रभुता किया?

राजा सुलैमान ने फरात से पलिश्तियों के देश और मिस्र की सीमा तक के सब राजाओं पर प्रभुता किया।

2 इतिहास 9:29–30

सुलैमान ने यरूशलेम में सारे इस्राएल पर कितने समय तक राज्य किया?

सुलैमान ने यरूशलेम में सारे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया।

2 इतिहास 10:1

सारे इस्राएली शेकेम क्यों गए थे?

सारे इस्राएली रहबाम को अपना राजा बनाने के लिए शेकेम गए थे।

2 इतिहास 10:2

रहबाम के पूरे इस्राएल का राजा बनने में क्या बाधाएँ थीं?

मिस्र में बँधुआई से यारोबाम का लौट आना रहबाम के पूरे इस्राएल का राजा बनने में बाधा थी।

2 इतिहास 10:3–4

रहबाम से यारोबाम और सब इस्राएली आकर क्या अनुरोध किया?

यारोबाम और सब इस्राएली आकर रहबाम से कहा कि राजा सुलैमान ने उन पर जो भारी जूआ डाला था, उसे कृपया हल्का करें।

2 इतिहास 10:6–7

जो बूढ़े सुलैमान के समय में उनके सामने उपस्थित थे, उन्होंने राजा रहबाम को क्या सम्मति ली?

बूढ़ों ने राजा रहबाम को यह सम्मति दी कि वे प्रजा के प्रति अच्छा बर्ताव करें और उनसे मधुर बातें कहे, तो वे सदा उनके अधीन बने रहेंगे।

2 इतिहास 10:8–9

रहबाम ने बूढ़ों की सम्मति को नजरअंदाज करने के बाद क्या किया?

रहबाम ने उन जवानों से सम्मति ली जो उसके संग बड़े हुए थे, उनसे पूछा कि उन्हें लोगों का जूआ हल्का करने की विनती पर कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

2 इतिहास 10:10–11

उन जवानों ने, जो रहबाम के संग बड़े हुए थे, लोगों के जूआ को हल्का करने की विनती के संबंध में उसे क्या सम्मति दी?

जवानों ने रहबाम को सम्मति दी कि वे लोगों से कहें कि यद्यपि मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी करूँगा।

2 इतिहास 10:12–14

जब यारोबाम और इस्राएल के सभी लोग तीसरे दिन रहबाम के पास आए, तब क्या हुआ?

रहबाम राजा ने बूढ़ों की दी हुई सम्मति छोड़कर जवानों की सम्मति के अनुसार उनसे कठोरता से उत्तर दिया।

2 इतिहास 10:15

राजा रहबाम ने इस्राएल के लोगों की बात क्यों नहीं सुनी?

इस्राएल के लोगों की बात न सुनने का राजा का निर्णय यहोवा द्वारा यारोबाम से अहिय्याह के माध्यम से कही गई वचन को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा ही ठहराया था।

2 इतिहास 10:16

राजा रहबाम के इस बयान पर इस्राएलियों की प्रतिक्रिया क्या थी कि वह उनके जूए को और अधिक भारी बना देंगे?

जब इस्राएलियों ने राजा रहबाम की बात सुनी, तो इस्राएल के लोगों ने कहा कि उनका दाऊद में कोई भाग नहीं है। इस्राएल के लोगों ने कहा कि वे अपने-अपने डेरे को लौट जाएं, और रहबाम से कहा कि वे अपने ही घराने की चिन्ता कर।

2 इतिहास 10:18

जब राजा रहबाम ने हदोराम को, जो बेगारों पर अधिकारी थे, इस्राएल के लोगों के पास भेजा, तो उन्होंने कैसे प्रतिक्रिया दी?

इस्राएल के लोगों ने हदोराम पर पथराव किया और वह मर गया और राजा रहबाम फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर, यरूशलेम को भाग गया।

2 इतिहास 11:1

जब रहबाम यरूशलेम पहुँचे, तो उन्होंने यहूदा और बिन्यामीन के घराने को इस्राएल के साथ युद्ध करने के लिए क्यों इकट्ठा किया?

रहबाम ने यहूदा और बिन्यामीन के घराने को इकट्ठा किया ताकि राज्य को अपने वश में फिर ला सकें।

2 इतिहास 11:2-4

यहोवा ने शमायाह के द्वारा रहबाम और पूरे इस्राएल को क्या संदेश दिया?

यहोवा का संदेश था कि उन्हें अपने अपने भाइयों पर चढ़ाई नहीं करना चाहिए और उनके खिलाफ युद्ध नहीं करनी चाहिए।

2 इतिहास 11:5-10

रहबाम ने यहूदा में नगर क्यों दृढ़ किए?

रहबाम ने यहूदा में बचाव के लिये ये नगर दृढ़ किए।

2 इतिहास 11:11-12

रहबाम की कुछ उपलब्धियाँ क्या थीं?

रहबाम ने नगरों को और भी दृढ़ करके उनमें प्रधान ठहराए, और एक-एक नगर में उसने ढालें और भाले रखवाकर उनको अत्यन्त दृढ़ कर दिया।

2 इतिहास 11:13-14

लेवीय अपनी चराइयों और निज भूमि छोड़कर, यहूदा और यरूशलेम में क्यों आए?

लेवीय अपनी चराइयों और निज भूमि छोड़कर, यहूदा और यरूशलेम में आए क्योंकि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उनको निकाल दिया था कि वे यहोवा के लिये याजक का काम न करें।

2 इतिहास 11:14-15

यारोबाम ने यहूदा में आने वाले याजकों और लेवियों की जगह कैसे ली?

यारोबाम ने ऊँचे स्थानों और बकरा देवताओं और अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये, अपनी ओर से याजक ठहरा लिए।

2 इतिहास 11:16-17

इस्राएल के सब गोत्रों के लोगों ने रहबाम और यहूदा के राज्य को सुदृढ़ करने के लिए क्या किया?

इस्राएल के सब गोत्रों में से जितने मन लगाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के खोजी थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिये यरूशलेम को आए।

2 इतिहास 11:22-23

रहबाम के लिए समझ-बूझकर काम करने का तरीका क्या था?

रहबाम ने समझ-बूझकर काम किया और अपने सब पुत्रों को अलग-अलग करके यहूदा और बिन्यामीन के सब देशों के सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया।

2 इतिहास 12:1

जब रहबाम का राज्य दृढ़ हो गया और वह आप स्थिर हो गया, तो उन्होंने कौन सी गलतियाँ कीं?

रहबाम और उसके साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया।

2 इतिहास 12:2

मिस्र के राजा शीशक, यरूशलेम के विरुद्ध क्यों आए?

शीशक यरूशलेम के खिलाफ आए क्योंकि लोग ने यहोवा से विश्वासघात किया।

2 इतिहास 12:5–6

जब शमायाह भविष्यद्वक्ता ने रहबाम और यहूदा के हाकिमों से कहा कि उन्हें शीशक के हाथ में इसलिए कर दिया गया है क्योंकि उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया था, तो उनकी प्रतिक्रिया क्या रही?

रहबाम और यहूदा के हाकिमों ने स्वयं को दीन किया और घोषणा की कि यहोवा धर्मी हैं।

2 इतिहास 12:7

जब यहोवा ने देखा कि रहबाम और यहूदा के हाकिमों ने स्वयं को दीन किया है, तो उन्होंने कैसे प्रतिक्रिया दी?

यहोवा ने उनका कुछ बचाव किया, लेकिन फिर भी उन्हें शीशक के अधीन सेवक बनने की अनुमति दी।

2 इतिहास 12:8

यहोवा ने यहूदा के हाकिमों को शीशक के अधीन रहने की अनुमति क्यों दी?

यहोवा ने उन्हें शीशक के अधीन रहने की अनुमति दी ताकि वे जान लें कि उनकी सेवा करना और देश-देश के राज्यों की भी सेवा में अन्तर होता है।

2 इतिहास 12:9

शीशक यरूशलेम से क्या ले गए?

शीशक ने यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएँ और राजभवन की अनमोल वस्तुएँ उठा ले गया, और सोने की जो ढालें सुलैमान ने बनाई थीं, उनको भी वह ले गया।

2 इतिहास 12:12

यहोवा का क्रोध रहबाम से क्यों उतर गया?

यहोवा का क्रोध उतर गया क्योंकि रहबाम ने स्वयं को दीन किया और यहूदा की दशा कुछ अच्छी भी थी।

2 इतिहास 12:13–14

यह क्यों कहा गया कि "राजा रहबाम ने वह कर्म किया जो बुरा है"?

यह कहा गया था कि रहबाम ने बुरा कर्म किया क्योंकि उन्होंने अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया।

2 इतिहास 12:16

रहबाम की मृत्यु के बाद और यरूशलेम में उनके मिट्टी दिए जाने के बाद क्या हुआ?

उसका पुत्र अबिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 13:2

अबिय्याह ने किसके विरुद्ध लड़ाई किया?

अबिय्याह ने यारोबाम के विरुद्ध लड़ाई किया।

2 इतिहास 13:4

समारैम नामक पहाड़ कहाँ स्थित है?

समारैम नामक पहाड़ एप्रैम के पहाड़ी देश में स्थित है।

2 इतिहास 13:7

यारोबाम के पास कौन लोग इकट्ठा हुए?

उसके पास हलके और ओछे मनुष्य इकट्ठा हो गए।

2 इतिहास 13:8

अबिय्याह के अनुसार, किसने कहा कि वे यहोवा के राज्य का सामना कर सकते हैं?

अबिय्याह के अनुसार, यारोबाम ने कहा कि वह यहोवा के राज्य का सामना कर सकते हैं।

2 इतिहास 13:10

किसने यहोवा को नहीं त्यागा था?

अबिय्याह के देश यहूदा ने उन्हें नहीं त्यागा था।

2 इतिहास 13:12

यहोवा के विरुद्ध लड़ने पर कौन सफल नहीं हो सकता?

इस्राएल के लोग यहोवा के खिलाफ लड़कर सफल नहीं हो सकते।

2 इतिहास 13:13

यारोबाम की युद्ध के लिए क्या योजना थी?

यारोबाम ने घातकों को उनके पीछे भेज दिया, वे तो यहूदा के सामने थे, और घातक उनके पीछे थे।

2 इतिहास 13:18

यहूदा के लोगों कैसे प्रबल हुए?

यहूदा के लोग प्रबल हुए क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा था।

2 इतिहास 13:20

यारोबाम की मृत्यु कैसे हुई?

यहोवा ने उसको ऐसा मारा कि वह मर गया।

2 इतिहास 14:2–3

आसा के कौन से कार्य यह प्रमाण थे कि उन्होंने यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक किया?

आसा ने पराई वेदियों को और ऊँचे स्थानों को दूर किया, और लाठों को तुड़वा डाला, और अशेरा नामक मूरतों को तोड़ डाला।

2 इतिहास 14:5–6

आसा के शासनकाल के दौरान राज्य में चैन क्यों थी और लड़ाई क्यों नहीं हुए?

राज्य में चैन थी और आसा के शासनकाल के दौरान कोई लड़ाई नहीं हुआ क्योंकि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था।

2 इतिहास 14:7

आसा ने शहरपनाह का निर्माण करने की योजना क्यों बनाई?

आसा ने शहरपनाह बनाने की योजना बनाई क्योंकि यहोवा ने उन्हें चारों ओर से विश्राम प्रदान की थी।

2 इतिहास 14:9–11

जब जेरह नामक एक कूशी सेना इस्राएल के लोगों के खिलाफ आई, तो आसा की प्रतिक्रिया क्या रही?

आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी, यह स्वीकार करते हुए कि वे और उनकी सेना यहोवा के नाम का भरोसा करके जेरह की विशाल भीड़ के विरुद्ध आ रहे थे।

2 इतिहास 14:12

आसा और यहूदियों के सामने कूशियों पर किसने आक्रमण किया?

यहोवा ने आसा और यहूदा के सामने कूशियों को भाग दिया।

2 इतिहास 14:14

सेना ने गरार के आसपास के नगरों के साथ क्या किया?

सेना ने गरार के आसपास के नगरों को मार लिया और लूट लिया।

2 इतिहास 15:1–2

अजर्याह ने राजा आसा को परमेश्वर का क्या संदेश दिया?

संदेश यह था कि यहोवा आसा के संग थे, जब आसा यहोवा के संग थे, लेकिन अगर आसा यहोवा को त्याग देंगे, तो यहोवा आसा को त्याग देंगे।

2 इतिहास 15:3

इस्राएल बहुत दिन तक किसके बिना रहा?

इस्राएल बहुत दिन तक सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेवाले याजक के और बिना व्यवस्था के रहा।

2 इतिहास 15:5

उस समय, उस देश के सब निवासियों में क्या था?

उस समय, उस देश के सब निवासियों में बड़ा ही कोलाहल होता था।

2 इतिहास 15:6

परमेश्वर ने पृथ्वी के निवासियों को कैसे कष्ट में डाला?

परमेश्वर ने पृथ्वी के निवासियों को विभिन्न प्रकार का कष्ट देकर उन्हें घबरा देता था।

2 इतिहास 15:8

जब आसा ने नबी का संदेश सुना, तब उन्होंने क्या नये सिरे से बनाया?

आसा ने नबी का संदेश सुनकर यहोवा की वेदी नये सिरे से बनाया।

2 इतिहास 15:9

क्यों बहुत से लोग राजा आसा के पास एप्रैम, मनश्शे, और शिमोन से आए?

वे आए क्योंकि उन्होंने देखा कि यहोवा राजा आसा के संग रहते थे।

2 इतिहास 15:12

लोगों ने क्या करने की शपथ खाई ?

लोगों ने अपने पूरे मन और सारे जीव से अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को खोजने का की शपथ खाई।

2 इतिहास 15:13

जो कोई यहोवा की खोज नहीं करेंगे, उसके साथ क्या होगा?

जो कोई यहोवा की खोज नहीं करेंगे, वह मार डाला जाएगा।

2 इतिहास 15:15

यहोवा ने लोगों को अपने सारे मन से शपथ लेने के बाद क्या दिया?

यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्राम दिया।

2 इतिहास 15:17

राजा आसा आसा के मन की स्थिति कैसी थी?

राजा आसा के मन यहोवा के प्रति जीवन भर निष्कपट रहा।

2 इतिहास 15:19

आसा के राज्य के पैंतीसवें वर्ष तक फिर क्या नहीं हुआ था?

आसा के राज्य के पैंतीसवें वर्ष तक फिर लड़ाई न हुई।

2 इतिहास 16:1

इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा के खिलाफ रामाह को दृढ़ आक्रामक रूप से क्यों किया?

बाशा ने आक्रामक रूप से दृढ़ किया ताकि वे किसी को भी आसा की भूमि के पास आने-जाने की अनुमति न दे सकें।

2 इतिहास 16:2–3

आसा ने चाँदी-सोना को भण्डारों से बाहर क्यों निकाला और इसे अराम के राजा बेन्हदद के पास क्यों भेजा?

आसा ने बेन्हदद को प्रोत्साहित करने के लिए चाँदी-सोना भेजा ताकि वे बाशा के साथ वाचा तोड़ दें और आसा के साथ एक नई वाचा बंधे।

2 इतिहास 16:3

आसा क्यों चाहते थे कि बेन्हदद बाशा के साथ अपनी वाचा तोड़ दें?

आसा चाहते थे कि बेन्हदद वाचा तोड़ दें ताकि बाशा आसा से दूर हो जाए।

2 इतिहास 16:4–6

जब बाशा ने बेन्हदद के चढ़ाई के कारण रामाह को दृढ़ करना छोड़ दिया, तब क्या हुआ?

राजा आसा ने पूरे यहूदा देश को साथ लिया और रामाह के पत्थरों और लकड़ी को, जिनसे बाशा काम करता था, उठा ले गया, और उनसे उसने गेबा, और मिस्पा को दृढ़ किया।

2 इतिहास 16:7–8

हनानी दर्शी ने आसा को क्यों फटकार लगाई?

हनानी ने आसा को फटकार लगाई क्योंकि उन्होंने कूशियों के खिलाफ यहोवा पर भरोसा करने के बजाय अराम के राजा के साथ एक वाचा पर भरोसा किया।

2 इतिहास 16:9

यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर हर जगह क्यों फिरती रहती है ?

यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर फिरती रहती है ताकि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए।

2 इतिहास 16:10

हनानी की फटकार पर आसा की प्रतिक्रिया क्या थी?

आसा दर्शी पर क्रोधित हुआ और उसे काठ में ठोंकवा दिया।

2 इतिहास 16:12

आसा ने अपने पाँव के रोग पर कैसी प्रतिक्रिया दी?

आसा रोगी होकर यहोवा की नहीं बल्कि वैद्यों ही की शरण ली।

2 इतिहास 16:14

उनकी मृत्यु के बाद आसा का कैसे सम्मान किया गया?

लोगों ने आसा को सुगन्ध-द्रव्यों और गंधी के काम के भाँति-भाँति के मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा दिया और बहुत सा सुगन्ध-द्रव्य उसके लिये जलाया गया।

2 इतिहास 17:2

यहोशापात ने सिपाहियों के दल को कहाँ पर ठहरा दिए?

यहोशापात ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिए।

2 इतिहास 17:3

यहोवा यहोशापात के संग क्यों थे?

यहोवा यहोशापात के संग थे क्योंकि उन्होंने अपने मूलपुरुष दाऊद की प्राचीन चाल का अनुसरण किया।

2 इतिहास 17:4

यहोशापात ने किसके चाल का अनुसरण नहीं किया, क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलता थे?

वह परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलता थे, और इस्राएल के से काम नहीं करता था।

2 इतिहास 17:6

यहोशापात का मन किस पर मगन था?

यहोवा के मार्गों पर चलते-चलते यहोशापात का मन मगन हो गया।

2 इतिहास 17:9

जब हाकिमों, लेवियों और याजकों ने यहूदा में शिक्षा दी, तो उनके पास कौन सी पुस्तक थी?

उन्होंने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लिये हुए यहूदा में शिक्षा दी।

2 इतिहास 17:10

यहूदा के आस-पास के देशों के राज्य-राज्य में यहोवा का डर के कारण उन्होंने क्या नहीं किया?

यहूदा के आस-पास के देशों के राज्य-राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया, कि उन्होंने यहोशापात से युद्ध न किया।

2 इतिहास 17:12

यहोशापात ने यहूदा में कौन सी दो चीजें तैयार किए?

यहोशापात ने यहूदा में किले और भण्डार के नगर तैयार किए।

2 इतिहास 17:16

जिक्री के पुत्र अमस्याह ने अपनी ही इच्छा से क्या अर्पण किया?

अमस्याह ने अपने को अपनी ही इच्छा से यहोवा को अर्पण किया।

2 इतिहास 17:17

बिन्यामीन में से एल्यादा किस प्रकार के पुरुष थे?

एल्यादा एक शूरवीर पुरुष थे।

2 इतिहास 18:1

यहोशापात ने अहाब के साथ कैसे सम्बंध स्थापित किया?

यहोशापात ने अपने घराने के एक सदस्य से अपनी बेटी का विवाह-सम्बंध करवाकर अहाब के साथ सम्बंध स्थापित किया।

2 इतिहास 18:4

यहोशापात ने इस्राएल के राजा को अपना उत्तर पाने के लिए क्या करने को कहा?

यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, "आओ, पहले यहोवा का वचन मालूम करें।"

2 इतिहास 18:7

इस्राएल के राजा को यिम्ला के पुत्र मीकायाह से घृणा क्यों था?

इस्राएल के राजा मीकायाह से घृणा करते थे क्योंकि उन्होंने राजा के बारे में कभी कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि ही की नबूवत करते थे।

2 इतिहास 18:11

नबियों ने कहा कि गिलाद के रामोत को राजा के हाथ में किसने सौंपा था?

वे सभी नबूवत कर रहे थे कि यहोवा ने गिलाद के रामोत को राजा के हाथों में कर दिया है।

2 इतिहास 18:12

दूत ने राजा को नबियों की कही बातें मीकायाह को क्या बताईं?

दूत ने मीकायाह से कहा कि नबी लोग एक ही मुँह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं।

2 इतिहास 18:16

जब मीकायाह ने इस्राएलियों को पहाड़ों पर तितर-बितर देखा, तो उसने उनकी तुलना किससे की?

मिकायाह ने कहा कि उन्हें सारा इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान पहाड़ों पर तितर-बितर दिखाई पड़ा।

2 इतिहास 18:18

जब मीकायाह ने यहोवा को सिंहासन पर विराजमान देखा, तब स्वर्ग की सारी सेना कहाँ थीं?

मिकायाह ने यहोवा को सिंहासन पर विराजमान देखा, और उसके दाएँ-बाएँ खड़ी हुई स्वर्ग की सारी सेना दिखाई पड़ी।

2 इतिहास 18:19

जब अहाब गिलाद के रामोत गए, तो यहोवा क्या होने के लिए कह रहे थे?

यहोवा इस्राएल के राजा अहाब को बहकाने के लिए किसी की तलाश कर रहे थे, ताकि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करे।

2 इतिहास 18:21

आत्मा ने कहा कि वह जाकर किसके पैठ के उनसे झूठ बुलवाएगा?

आत्मा ने कहा कि वह जाकर अहाब के सब नबियों में पैठ के उनसे झूठ बुलवाएगा।

2 इतिहास 18:22

मीकायाह ने क्या कहा कि यहोवा ने इस्राएल के राजा के लिए क्या बात कही है?

मिकायाह ने कहा कि यहोवा ने उनके लिए हानि की बात कही है।

2 इतिहास 18:26

मीकायाह को तब तक कहाँ रहना था जब तक इस्राएल के राजा कुशल से लौट नहीं आते?

राजा ने कहा कि मीकायाह को तब तक बन्दीगृह में रखा जाए जब तक वह कुशल से वापस लौट नहीं आते।

2 इतिहास 18:27

यदि राजा कुशल से लौटते हैं, तो इसका मिकायाह के शब्दों के संदर्भ में क्या अर्थ होगा?

मिकायाह ने कहा कि यदि राजा कुशल से लौटे आए, तो इसका अर्थ होगा कि यहोवा ने उनके द्वारा नहीं कहा।

2 इतिहास 18:30

अराम के राजा ने अपने रथों के प्रधानों को किससे लड़ने करने के लिए कहा था?

अराम के राजा ने अपने रथों के प्रधानों को न तो छोटे सैनिक से और न बड़े सैनिक से, बल्कि केवल इस्राएल के राजा से लड़ने के लिए कहा।

2 इतिहास 18:32

जब प्रधान को एहसास हुआ कि यहोशापात इस्राएल के राजा नहीं हैं, तो उन्होंने क्या किया?

यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट गए।

2 इतिहास 18:34

अहाब की मृत्यु कब हुई थी?

सूर्य अस्त होते-होते अहाब मर गया।

2 इतिहास 19:3

यहोशापात के मन में क्या अच्छी बातें पाई जाती हैं?

यहोशापात में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं, वह अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है।

2 इतिहास 19:5

यहोशापात ने न्यायी को कहाँ ठहराया?

यहोशापात ने यहूदा के एक-एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया।

2 इतिहास 19:6

यहोशापात ने कहा कि जब न्यायी न्याय सुना रहे थे तब यहोवा कहाँ थे?

उसने न्यायियों से कहा कि न्याय करते समय यहोवा उनके साथ रहेंगे।

2 इतिहास 19:9

यहोशापात ने कहा कि यरूशलेम के न्यायियों को यहोवा के प्रति भय मानने के लिए कैसा मन रखना चाहिए?

यहोशापात ने उनको आज्ञा दी कि वे यहोवा का भय मानकर, सच्चाई और निष्कपट मन से कार्य करें।

2 इतिहास 19:10

यदि लोग यहोवा के विषय दोषी न हो तो उन पर क्या नहीं आएगा?

लोगों से कहा गया कि यदि लोग यहोवा के विषय दोषी न हो, तो उन पर उनका क्रोध नहीं भड़केगा।

2 इतिहास 19:11

यहोशापात ने किसके साथ प्रार्थना की कि यहोवा बने रहें?

यहोशापात ने यहोवा से प्रार्थना की कि वह भले मनुष्य के साथ रहे।

2 इतिहास 20:1

मोआबियों, अम्मोनियों, और मूनियों ने यहोशापात पर चढ़ाई क्यों किए?

वे युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की।

2 इतिहास 20:4

यहूदा के लोग यहोवा से भेंट करने को कहाँ से आए थे?

लोग यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आए।

2 इतिहास 20:5

यहोशापात लोगों की मण्डली में कहाँ खड़े थे?

यहोशापात यहोवा के भवन में नये आँगन के सामने खड़े थे।

2 इतिहास 20:9

जब लोग अपनी क्लेश में यहोवा को दुहाई देते थे, तो यहोशापात ने यहोवा का कौन सा वाचा स्मरण किया?

यहोशापात ने कहा कि जब लोग अपनी क्लेश में यहोवा को दुहाई देंगे, तब वह उन्हें सुनेंगे और बचाएंगे।

2 इतिहास 20:10

जब इस्राएली मिस्र से बाहर आए तो यहोवा ने अम्मोनी और मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों के साथ क्या नहीं करने दिया?

जब इस्राएली मिस्र से बाहर आए, तो यहोवा ने उन्हें उन पर चढ़ाई करने की अनुमति नहीं दी।

2 इतिहास 20:13

यहूदा के लोगों में से कौन-सा समूह यहोवा के सम्मुख खड़े रहे?

सब यहूदी अपने-अपने बाल-बच्चों, स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सम्मुख खड़े रहे।

2 इतिहास 20:15

यहोवा ने क्यों कहा कि बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो?

यहोवा ने उन्हें बताया कि इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो, क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है।

2 इतिहास 20:17

यहोवा ने कहा कि जब लोग अपनी स्थिति में स्थिर ठहरे रहेंगे, तो वे क्या देखेंगे?

यहोवा ने उनसे कहा कि वे ठहरे रहें और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखें।

2 इतिहास 20:18

सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने आराधना में क्या किया?

सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने गिरकर यहोवा को दण्डवत् किया।

2 इतिहास 20:21

हथियार-बन्दों के आगे-आगे चलते हुए यहोशापात ने यहोवा का धन्यवाद करने के लिए क्यों कहा?

हथियार-बन्दों के आगे-आगे चलते हुए यहोशापात ने उनसे कहा, "यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।"

2 इतिहास 20:22

जब यहूदा के लोग गाकर स्तुति करने लगे, तब यहोवा ने क्या किया?

जब वे गाकर स्तुति करने लगे, तब यहोवा ने यहूदा के विरुद्ध आ रहे लोगों पर घातकों को बैठा दिया।

2 इतिहास 20:24

जब यहूदा के लोगों ने उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तो उन्होंने क्या देखा?

जब उन्होंने उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़े हुए शव हैं; और कोई नहीं बचा।

2 इतिहास 20:25

लोगों को सेना से लूट ले जाने में कितना समय लगा?

लोगों को लूट इतनी मिली, कि बटोरते-बटोरते तीन दिन बीत गए, क्योंकि यह बहुत अधिक थी।

2 इतिहास 20:27

यहोशापात और उनके लोग आनन्द के साथ यरूशलेम क्यों लौटे?

वे आनन्द के साथ यरूशलेम लौटे क्योंकि यहोवा ने उन्हें उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का आनन्द दिया था।

2 इतिहास 20:30

परमेश्वर ने यहोशापात को क्या दिया जिससे उनके राज्य को चैन मिला?

यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको चारों ओर से विश्राम दिया।

2 इतिहास 20:32

यहोवा की दृष्टि में यहोशापात ने क्या किया था?

यहोशापात ने जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा।

2 इतिहास 20:37

अहज्याह के साथ मेल करने के कारण, यहोशापात के खिलाफ क्या नबूवत की गई थी?

क्योंकि यहोशापात ने अहज्याह के साथ मेल किया था, इसलिए यहोवा ने उनके बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डाला।

2 इतिहास 21:3

यहोशापात ने यहोराम को राज्य क्यों दिया?

यहोशापात ने राज्य यहोराम को दिया क्योंकि यहोराम जेठा था।

2 इतिहास 21:4

राजा के रूप में नियुक्त होने के बाद यहोराम ने अपने सब भाइयों के साथ क्या किया?

जब यहोराम अपने पिता के राज्य पर नियुक्त हुआ, तब उसने अपने सब भाइयों को और इस्राएल के कुछ हाकिमों को भी तलवार से घात किया।

2 इतिहास 21:7

यहोवा ने दाऊद के घराने को नाश क्यों नहीं करना चाहते थे?

यहोवा ने दाऊद के साथ जो वाचा बाँधी थी, उसके कारण वह दाऊद के घराने को नाश नहीं करना चाहते थे।

2 इतिहास 21:10

लिब्ना ने यहूदा की अधीनता क्यों छोड़ दी?

लिब्ना ने यहूदा की अधीनता छोड़ दी, क्योंकि यहोराम ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था।

2 इतिहास 21:11

यहोराम ने यहूदा के पहाड़ों में क्या बनाया?

यहोराम ने यहूदा के पहाड़ों पर ऊँचे स्थान बनाए।

2 इतिहास 21:15

एलिय्याह ने कहा कि यहोराम के रोग में उनकी अंतड़ियों के साथ क्या होगा?

यहोराम को अंतड़ियों के रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा यहाँ तक कि उस रोग के कारण उनकी अंतड़ियाँ प्रतिदिन निकलती जाएँगी।

2 इतिहास 21:17

पलिश्तियों और अरबियों ने राजा के राजभवन में से क्या ले लिया था?

वे राजा के राजभवन में जितनी सम्पत्ति मिली उन सबको ले गए।

2 इतिहास 21:19

यहोराम के प्रजा ने उसके लिए क्या नहीं किया जो उन्होंने उसके पुरखाओं के लिए किया था?

उसकी प्रजा ने उनके पुरखाओं के लिए जैसे किया था, वैसा उसके लिये कुछ न जलाया।

2 इतिहास 22:3

अपनी माता की सलाह के कारण अहज्याह कैसी चाल चला?

अहज्याह अहाब के घराने की सी चाल चला, क्योंकि उसकी माता उसे दुष्टता करने की सलाह देती थी।

2 इतिहास 22:4

अहज्याह ने यहोवा की दृष्टि में अहाब के घराने के समान क्या किया?

अहज्याह ने अहाब के घराने के समान वह काम करता था जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

2 इतिहास 22:6

अहज्याह, अहाब के पुत्र यहोराम से मिलने क्यों गए?

अहज्याह यहोराम को देखने के लिए यिज्रेल गया, क्योंकि यहोराम रोगी था।

2 इतिहास 22:7

अहज्याह की यात्रा के माध्यम से परमेश्वर ने यहोराम के लिए क्या किया?

अहज्याह का विनाश यहोवा की ओर से यहोराम की यात्रा के माध्यम से लाया गया था।

2 इतिहास 22:9

येहू को अहज्याह के पिता के बारे में क्या स्मरण हुआ?

येहू ने कहा कि अहज्याह यहोशापात के पुत्र थे, जो अपने पूरे मन से यहोवा की खोज करता था।

2 इतिहास 22:10

अहज्याह की माता ने देखा कि वह मर चुके हैं, तो उन्होंने क्या किया?

जब उन्होंने देखा कि उनका पुत्र मर गया है, तब उसने उठकर यहूदा के घराने के सारे राजवंश को नाश किया।

2 इतिहास 22:12

योआश परमेश्वर के भवन में कितने समय तक छिपे रहे जब अतल्याह देश पर राज्य करती रही?

योआश को परमेश्वर के भवन में छः वर्ष तक छिपाया गया था, जब अतल्याह देश पर राज्य करती रही।

2 इतिहास 23:3

यहोयादा को मुख्य-मुख्य पुरुषों से यह कहने का साहस कैसे मिला कि राजकुमार राज्य करेगा?

यहोयादा ने कहा कि राजकुमार राज्य करेगा, जैसे कि यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय कहा है।

2 इतिहास 23:4

विश्रामदिन आनेवाले याजकों और लेवियों को कौन से काम सौंपे गए थे?

जो लोग विश्रामदिन पर काम के लिए आते हैं, वे द्वारपाल होंगे।

2 इतिहास 23:7

लेवियों को राजा के साथ रहने के लिए कब कहा गया था?

उन्हें बताया गया कि राजा के आते-जाते उसके साथ रहना है।

2 इतिहास 23:8

लेवियों और सब यहूदियों ने यहोयादा के आज्ञा का कितनी पूर्णता से पालन किया?

उन्होंने हर प्रकार से याजक यहोयादा के सब आज्ञाओं के अनुसार किया।

2 इतिहास 23:11

जब उन्होंने राजकुमार के सिर पर मुकुट रखा, तो उन्होंने उसे क्या किया?

उन्होंने राजकुमार को बाहर लाकर उसके सिर पर मुकुट रखा और उसे साक्षीपत्र दिया।

2 इतिहास 23:12

अतल्याह क्या हल्ला सुनकर यहोवा के भवन में लोगों के पास आई?

जब उसने लोगों के दौड़ते और राजा को सराहने का हल्ला सुना, तो वह यहोवा के भवन में लोगों के पास आई।

2 इतिहास 23:13

जब अतल्याह "राजद्रोह, राजद्रोह!" चिल्ला रही थीं, तब उन्होंने क्या किया?

अतल्याह अपने वस्त्र फाड़कर पुकारने लगी, "राजद्रोह, राजद्रोह!"

2 इतिहास 23:14

यहोयादा ने आदेश दिया कि जो कोई भी अतल्याह के पीछे चले, उसके साथ क्या किया जाना चाहिए?

यहोयादा ने कहा कि जो कोई उसके पीछे चले, वह तलवार से मार डाला जाए।

2 इतिहास 23:16

यहोयादा ने अपने और सारी प्रजा के और राजा के बीच कौन सी वाचा बँधाई?

यहोयादा ने अपने और सारी प्रजा के और राजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बँधाई।

2 इतिहास 23:19

यहोयादा ने यहोवा के भवन के फाटकों पर द्वारपालों को किसे रोकने के लिए खड़ा किया?

यहोयादा ने यहोवा के भवन के फाटकों पर द्वारपालों को इसलिए खड़ा किया, कि जो किसी रीति से अशुद्ध हो, वह भीतर जाने न पाए।

2 इतिहास 23:20

ऊँचे फाटक से होकर आने के बाद यहोयादा और लोगों ने राजा को कहाँ पर बैठाया?

लोग ऊँचे फाटक से होकर राजभवन में आए और राजा को राजगद्दी पर बैठाया।

2 इतिहास 24:2

योआश ने यहोवा की दृष्टि में ठीक काम कब तक किया?

जब तक यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक योआश वह काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है।

2 इतिहास 24:5

योआश ने याजकों और लेवियों को पूरे इस्राएल से रुपये इकट्ठा करने के लिए किस काम हेतु भेजा?

योआश ने उन्हें उनके परमेश्वर के भवन की मरम्मत के लिए पूरे इस्राएल से रुपये इकट्ठा करने के लिए भेजा।

2 इतिहास 24:7

अतल्याह के बेटों ने परमेश्वर के भवन से क्या लिया और बाल देवताओं के लिये प्रयोग की?

उन्होंने यहोवा के भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुएँ बाल देवताओं के लिये प्रयोग की थीं।

2 इतिहास 24:8

राजा ने जिस सन्दूक को बनाने की आज्ञा दी उसे कहाँ रखा गया था?

राजा ने एक सन्दूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रखा गया।

2 इतिहास 24:10

किस समूह के लोगों आनन्दित हुए और रुपये सन्दूक में डालते गए?

सब हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित हो रुपये लाकर सन्दूक में डालते गए।

2 इतिहास 24:11

जब प्रधानों ने प्रतिदिन सन्दूक को खाली किया, तो उन्होंने क्या इकट्ठा किए?

उन्होंने प्रतिदिन सन्दूक को खाली किया और बहुत रुपये इकट्ठा किए।

2 इतिहास 24:13

कारीगर ने परमेश्वर के भवन की मरम्मत करते समय इसे कैसे दृढ़ किया?

कारीगर ने परमेश्वर के भवन जैसा का तैसा बनाकर दृढ़ कर दिया।

2 इतिहास 24:16

यहोयादा को दाऊदपुर में राजाओं के बीच क्यों मिट्टी दी गई?

उन्होंने उसे दाऊदपुर में राजाओं के बीच मिट्टी दी, क्योंकि उसने इस्राएल में और परमेश्वर के और उसके भवन के विषय में भला किया था।

2 इतिहास 24:19

जब यहोवा ने उन्हें चिताने के लिए नबी भेजे, तो लोगों ने क्या किया?

जब यहोवा ने उन्हें चिताने के लिए नबी भेजे, तो लोगों ने कान न लगाया।

2 इतिहास 24:20

जकर्याह ने लोगों से क्यों कहा कि यहोवा ने उन्हें त्याग दिया है?

जकर्याह ने लोगों से कहा कि चूँकि उन्होंने यहोवा को त्याग दिया है, इसलिए यहोवा ने भी उन्हें त्याग दिया है।

2 इतिहास 24:22

राजा योआश ने जकर्याह के पिता की प्रीति भूलकर क्या किया?

इस प्रकार राजा योआश ने वह प्रीति भूलकर जो जकर्याह के पिता यहोयादा ने उससे की थी, उसके पुत्र को घात किया।

2 इतिहास 24:24

यहोवा ने यहूदा को उनके त्याग के कारण अरामियों की थोड़े ही सैनिकों के हाथों में क्यों कर दी?

अरामी एक छोटी सेना के साथ आए थे, लेकिन यहोवा ने उन्हें एक बहुत बड़ी सेना उनके हाथ कर दी, क्योंकि यहूदा ने यहोवा को त्याग दिया था।

2 इतिहास 24:25

योआश के कर्मचारियों ने उसके विरुद्ध द्रोह की बात क्यों कहा?

योआश के कर्मचारियों ने उसके विरुद्ध द्रोह की बात क्यों कहा क्योंकि यहोयादा याजक के पुत्रों की हत्या हुई थी।

2 इतिहास 25:1

जब अमस्याह राज्य करने लगा, तब उनकी आयु कितनी थी और उन्होंने कितने समय तक राज्य किया?

जब अमस्याह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक राज्य करता रहा।

2 इतिहास 25:2

अमस्याह का मन किस स्थिति में था?

अमस्याह खरे मन से यहोवा के प्रति समर्पित नहीं था।

2 इतिहास 25:3-4

अमस्याह ने उन कर्मचारियों के बच्चों को क्यों नहीं मारा जिन्होंने उनके पिता राजा को मार डाला था?

अमस्याह ने उन कर्मचारियों के बच्चों को नहीं मारा जिन्होंने उनके पिता राजा को मार डाला था क्योंकि उसने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है, "पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।"

2 इतिहास 25:5-6

अमस्याह ने यहूदा और बिन्यामीन के तीन लाख चुने हुए शूरवीरों में अपने पितरों के घरानों के अनुसार शूरवीरों को कैसे ठहराया?

अमस्याह ने यहूदा के तीन लाख चुने हुए शूरवीरों में शामिल करने के लिए इस्राएल से एक लाख इस्राएली शूरवीरों को बुलवाया।

2 इतिहास 25:7

परमेश्वर के जन ने राजा से क्यों कहा कि उन्हें इस्राएल की सेना को अपने साथ नहीं ले जाना चाहिए?

परमेश्वर के जन ने राजा से कहा कि इस्राएल की सेना उनके साथ नहीं जानी चाहिए क्योंकि यहोवा इस्राएल के संग नहीं थे।

2 इतिहास 25:8

परमेश्वर के जन ने कहा कि भले ही अमस्याह युद्ध के लिये हियाव बाँधते फिर भी क्या होगा?

परमेश्वर के जन ने कहा कि परमेश्वर उन्हें शत्रुओं के सामने गिराएगा।

2 इतिहास 25:9

परमेश्वर के भक्त ने अमस्याह के प्रश्न का उत्तर कैसे दिया कि इस्राएल की सेना को दिए गए सौ किक्कार चाँदी का क्या करना चाहिए?

परमेश्वर के भक्त ने अमस्याह से कहा कि यहोवा उसे इससे भी बहुत अधिक दे सकते हैं।

2 इतिहास 25:10

एप्रैम की दल का यहूदा के खिलाफ क्रोध क्यों भड़क उठा?

उनका क्रोध यहूदा के खिलाफ भड़क उठा क्योंकि अमस्याह ने दल को अलग कर दिया और उन्हें अपने स्थान को लौटा दिया।

2 इतिहास 25:11

जब अमस्याह अपने लोगों को नमक की तराई में ले गए, तो सेईरियों के दस हजार पुरुषों का क्या हुआ?

अमस्याह ने अपने लोगों को नमक की तराई में ले जाकर सेईरियों के दस हजार लोगों को मार डाला।

2 इतिहास 25:12

यहूदियों ने उन दस हजार को सेईर के बंदियों के साथ क्या किया जिन्हें उन्होंने जीवित पकड़ लिया था?

यहूदियों ने सेईर के लोगों को चट्टान की चोटी पर ले गये, और चट्टान की चोटी पर से गिरा दिया।

2 इतिहास 25:13

इस्राएल की सेना ने सामरिया से बेथोरोन तकयहूदा के सब नगरों पर क्या किया?

इस्राएल की सेना सामरिया से बेथोरोन तक यहूदा के सब नगरों पर टूट पड़े, और उनके तीन हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट ले ली।

2 इतिहास 25:14

अमस्याह ने सेईरियों से लाए गए देवताओं का क्या किया?

अमस्याह ने देवताओं को ले आकर अपने देवता करके खड़ा किया, और उन्हीं के सामने दण्डवत् करने, और उन्हीं के लिये धूप जलाने लगा।

2 इतिहास 25:15

यहोवा द्वारा भेजे गए भविष्यद्वक्ता ने अमस्याह से सेईरियों के देवताओं के बारे में क्या प्रश्न किया?

भविष्यद्वक्ता ने अमस्याह से पूछा कि वह उन लोगों के देवताओं की खोज क्यों कर रहे हैं जिनके देवता अपने ही लोगों को अमस्याह के हाथों से बचा नहीं सके।

2 इतिहास 25:16

भविष्यद्वक्ता ने कहा कि परमेश्वर ने अमस्याह को नाश करने को ठान क्यों लिया था?

परमेश्वर ने अमस्याह को नाश करने को ठान इसलिए लिया क्योंकि अमस्याह ने यह कार्य किया था और भविष्यद्वक्ता की सम्मति नहीं मानी थी।

2 इतिहास 25:17

अमस्याह ने इस्राएल के राजा योआश को क्या कहला भेजा?

अमस्याह ने योआश को यह कहला भेजा कि वे आएं और युद्ध में एक दूसरे का सामना करेंलें।

2 इतिहास 25:18–19

यहोवा के दूतों ने अमस्याह से कहा कि उन्हें घर पर ही क्यों रहना चाहिए?

यहोवा के दूतों ने अमस्याह से कहा कि वे घर पर रहें क्योंकि अमस्याह और यहूदा दोनों पराजित हो जाएंगे।

2 इतिहास 25:20

परमेश्वर यहूदा के लोगों को उनके शत्रुओं के हाथ में क्यों कर देंगे?

परमेश्वर उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में कर देंगे क्योंकि वे एदोम के देवताओं की खोज में लग गए थे।

2 इतिहास 25:21–22

जब इस्राएल के राजा योआश और यहूदा के राजा अमस्याह एक दूसरे का सामने बेतशेमेश में मिले, तो क्या परिणाम हुआ?

परिणाम यह हुआ कि यहूदा इस्राएल से हार गया, और हर एक अपने-अपने डेरे को भागा।

2 इतिहास 25:23–24

योआश ने यरूशलेम की शहरपनाह को गिराने और मन्दिर तथा राजभवन से जितना खजाना और बन्धक लेने के बाद वह किस स्थान पर लौट गए?

योआश ने यरूशलेम की शहरपनाह को गिराने के बाद राजभवन में जितना खजाना था, उस सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह सामरिया को लौट गया।

2 इतिहास 25:25

इस्राएल के राजा योआश के मरने के बाद यहूदा के राजा अमस्याह कितने वर्ष जीवित रहे?

अमस्याह योआश के मरने के बाद पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा।

2 इतिहास 25:26

अमस्याह के बारे में अन्य जानकारी कहाँ लिखी गई है?

अमस्याह से संबंधित अन्य बातें यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

2 इतिहास 25:27

जब अमस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़ दिया, तो उनके विरुद्ध क्या होने लगी?

जब अमस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़ दिया, तो उनके विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी होने लगी।

2 इतिहास 25:27–28

अमस्याह को लाकीश में मारने के बाद कहाँ मिट्टी दी गई?

अमस्याह को उनके पुरखाओं के बीच यहूदा के नगर में मिट्टी दी गई।

2 इतिहास 26:1

उज्जियाह को उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा किसने बनाया?

सब यहूदी प्रजा ने उज्जियाह को लेकर उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा बनाया।

2 इतिहास 26:2

उज्जियाह ने राजा बनने के बाद एलोत नगर का क्या किया?

उज्जियाह ने एलोत नगर को दृढ़ करके यहूदा में फिर मिला लिया।

2 इतिहास 26:4–5

उज्जियाह ने यहोवा की दृष्टि में अपने पिता के उदाहरण का अनुसरण कैसे किया?

उज्जियाह ने यहोवा की दृष्टि में ठीक था था वह किया और परमेश्वर की खोज में लगा रहता था।

2 इतिहास 26:5

जब तक उज्जिय्याह यहोवा की खोज करता रहा, तब तक उसके साथ क्या हुआ?

जब तक उज्जियाह ने यहोवा की खोज की, तब तक परमेश्वर ने उसको सफलता दी।

2 इतिहास 26:6–8

जब परमेश्वर ने उज्जियाह की उनके दुश्मनों के विरुद्ध लड़ाई में सहायता की, तो इसका क्या परिणाम हुआ?

परमेश्वर ने उज्जियाह की उसके शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में सहायता की, और उसकी कीर्ति मिस्र की सीमा तक भी फैल गई, क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी हो गया था।

2 इतिहास 26:9–10

उज्जियाह ने यरूशलेम के फाटक और जंगल में क्या बनवाए?

उज्जियाह ने यरूशलेम के कोने के फाटक पर और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मट बनवाकर दृढ़ किए। उन्होंने जंगल में गुम्मट बनवाए।

2 इतिहास 26:10

उज्जियाह ने गुम्मट क्यों बनाए, और उन्होंने जंगल में हौद क्यों खोदे?

उज्जियाह ने जानवर और खेती करने वाले लोगों के लिए जंगल में गुम्मट बनवाए और बहुत से हौद खुदवाए, क्योंकि वह खेती किसानी करनेवाला था।

2 इतिहास 26:11

उज्जियाह के योद्धाओं ने युद्ध कैसे किया?

उज्जियाह के योद्धाओं ने शत्रु के खिलाफ राजा की सहायता के लिए दल बाँधक युद्ध किया।

2 इतिहास 26:13

उज्जियाह की सेना ने युद्ध कैसे किया?

उज्जियाह की सेना ने शत्रुओं के विरुद्ध राजा की सहायता के लिए बड़े बल से युद्ध करनेवाले थे।

2 इतिहास 26:14–15

जब उज्जियाह ने अपनी सेना को तैयार किए, तो यरूशलेम में चतुर पुरुषों द्वारा क्या बनवाए?

यरूशलेम में, उज्जियाह ने कंगूरों पर रखने को चतुर पुरुषों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाए।

2 इतिहास 26:15

जब यहोवा ने उज्जिय्याह को अद्‌भुत सहायता दी, तब उसकी कीर्ति कितनी दूर तक फैली, जब तक कि वह सामर्थी नहीं हो गया?

उज्जियाह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई।

2 इतिहास 26:16

जब उज्जियाह सामर्थी हो गया, तो उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध कैसे अपराध किया?

उज्जियाह ने अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया जब वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया।

2 इतिहास 26:17–18

अजर्याह और अस्सी याजक उज्जियाह के पीछे क्यों गए, और अजर्याह ने क्यों कहा कि उज्जियाह ने पवित्रस्थान में धूप जलाकर पाप किया है?

याजकों ने उज्जियाह से कहा कि केवल याजक, हारून की सन्तान, ही पवित्रस्थान में धूप जलाने के लिए पवित्र किए गए हैं। इसलिए जब उज्जियाह ने यहोवा के लिए धूप जलाया, तब उन्होंने विश्वासघात किया है।

2 इतिहास 26:19

जब उज्जियाह ने अपने हाथ में धूपदान लेकर धूप जलाने का प्रयास किया और वह याजकों पर झुँझला रहा था, तो उनके साथ क्या हुआ?

तब उज्जियाह धूप जलाने को धूपदान हाथ में लिये हुए याजकों पर झुँझला रहा था, उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ।

2 इतिहास 26:20

उज्जियाह के माथे पर कोढ़ क्यों प्रगट हुआ?

उज्जियाह के माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ क्योंकि यहोवा ने उन्हें कोढ़ी कर दिया था।

2 इतिहास 26:21

उज्जियाह को मरने के दिन तक एक अलग घर में क्यों रहना पड़ा?

उज्जियाह को एक अलग घर में रहना पड़ा क्योंकि वह कोढ़ी थे और वह यहोवा के भवन में जाने न पाता था।

2 इतिहास 26:23

उज्जियाह की मृत्यु के बाद और उसके पुरखाओं के निकट मिट्टी दिए जाने के बाद कौन राज्य करने लगा?

उज्जियाह के पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 27:1

जब योताम यहूदा पर राज्य करने लगा, तब उनकी उम्र कितनी थी और उन्होंने कितने समय तक राज्य किया?

योताम पच्चीस वर्ष का था जब वे राजा बने और यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा।

2 इतिहास 27:2

यहूदा के लोग कैसी चाल चलते थे, भले ही योताम ने यहोवा की दृष्टि में ठीक किया?

यहूदा के लोग अभी भी बिगड़ी चाल चलते थे, भले ही योताम ने यहोवा की दृष्टि में ठीक किया।

2 इतिहास 27:3

योताम ने यरूशलेम में क्या बनवाया?

योताम ने यहोवा के भवन के ऊपरवाले फाटक को बनाया, और ओपेल की शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया।

2 इतिहास 27:4

योताम ने यहूदा के पहाड़ी देश और जंगलों में क्या बनाए?

योताम ने यहूदा के पहाड़ी देश में कई नगर दृढ़ किए, और जंगलों में गढ़ और गुम्मट बनाए।

2 इतिहास 27:5

अम्मोनियों ने योताम को चाँदी, गेहूँ, और जौ क्यों दिए?

अम्मोनियों के राजा से युद्ध करके योताम उन पर प्रबल हो गया इसलिए अम्मोनियों ने योताम को चाँदी, गेहूँ, और जौ दिए।

2 इतिहास 27:6

योताम कैसे सामर्थी बने?

योताम अपने आपको अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख जानकर सीधी चाल चलता था इसलिए वह सामर्थी बन गए।

2 इतिहास 27:9

योताम को उनकी मृत्यु के बाद कहाँ मिट्टी दी गई?

योताम को दाऊदपुर में मिट्टी दी गई।

2 इतिहास 27:9 (#2)

योताम की मृत्यु के बाद यहूदा के राजा कौन बने?

योताम के पुत्र आहाज उनके स्थान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 28:1

आहाज ने अपने मूलपुरुष दाऊद के समान क्या नहीं किया?

आहाज ने अपने मूलपुरुष दाऊद के समान काम नहीं किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था।

2 इतिहास 28:2

आहाज ने इस्राएल के राजाओं की सी चाल चलते हुए क्या किया?

आहाज ने बाल देवताओं की मूर्तियाँ ढलवा कर बनाईं।

2 इतिहास 28:3

आहाज ने बाल देवताओं की मूर्तियाँ ढलवाने, धूप जलाने, और उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हें

यहोवा ने इस्राएलियों के सामने देश से निकाल दिया था, अपने बच्चों के साथ क्या किया?

आहाज ने अपने बच्चों को आग में होम कर दिया।

2 इतिहास 28:5–6

अरामियों और इस्राएल के राजा के हाथों आहाज की हार का कारण क्या था?

आहाज को अरामियों और इस्राएल के राजा द्वारा पराजित किया गया क्योंकि उन्होंने और उनके लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था।

2 इतिहास 28:8

इस्राएली सामरिया में क्या लेकर वापस आई?

इस्राएली अपने भाइयों में से स्त्रियों, बेटों और बेटियों को मिलाकर दो लाख लोगों को बन्दी बनाकर, और उनकी बहुत लूट भी छीनकर सामरिया की ओर ले चले।

2 इतिहास 28:9

सामरिया में आने वाली सेना से मिलने कौन गए?

ओदेद नामक यहोवा का एक नबी सेना से मिलने के लिए गए।

2 इतिहास 28:9 (#2)

ओदेद ने सेना पर क्या आरोप लगाया?

ओदेद ने यहूदा के लोगों पर सेना का घात करने का आरोप लगाया, जिसकी चिल्लाहट स्वर्ग को पहुँच गई है।

2 इतिहास 28:10–11

ओबेद ने इस्राएल की सेना को यरूशलेम से दास-दासी बनाकर लाए गए बन्दियों के साथ क्या करने को कहा?

ओबेद ने सेना से कहा कि वे बन्दियों को वापस भेज दें, क्योंकि यहोवा का क्रोध उन पर भड़का है।

2 इतिहास 28:13

एप्रैम के लोगों के हाकिमों ने क्या कारण बताया कि उन्हें बन्दियों को सामरिया नहीं लाना चाहिए?

हाकिमों ने कहा कि इससे यहोवा के विरुद्ध उनके पाप और दोष बढ़ जाएगा और इस्राएल के विरुद्ध उनका बहुत क्रोध भड़का है।

2 इतिहास 28:14–15

जब हथियार-बन्दों ने कैदियों को उनके सामने छोड़कर चले गए तो हाकिमों ने बन्दियों के साथ क्या किया?

हाकिमों ने बन्दियों को ले लिया, और लूट में से सब नंगे लोगों को कपड़े, और जूतियाँ पहनाईं; और खाना खिलाया, और पानी पिलाया, और तेल मला; और तब निर्बल लोगों को गदहों पर चढ़ाकर, यरीहो को उनके भाइयों के पास पहुँचा दिया।

2 इतिहास 28:16–18

राजा आहाज के लिए अश्शूर के राजाओं से सहायता माँगने के लिए दूत भेजना क्यों आवश्यक हो गया था?

एदोमियों ने यहूदा पर हमला किया था और पलिश्तियों ने नीचे के देश और यहूदा के दक्षिण के नगरों पर चढ़ाई किया था, इसलिए आहाज के लिए अश्शूर के राजाओं से सहायता माँगना आवश्यक हो गया था।

2 इतिहास 28:19

आहाज ने ऐसा क्या किया जिससे यहोवा ने यहूदा को दबा दिया?

यहूदा को दबा दिया गया क्योंकि आहाज निरंकुश होकर चला, और यहोवा से बड़ा विश्वासघात किया।

2 इतिहास 28:21

आहाज ने यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमों के घरों में से क्यों लूटा?

आहाज ने यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमों के घरों में से धन निकालकर अश्शूर के राजा को दिया।

2 इतिहास 28:22–23

आहाज और सारे इस्राएल के पतन का कारण क्या था?

आहाज ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया और दमिश्क के देवताओं के लिए बलि चढ़ाया।

2 इतिहास 28:24

आहाज ने परमेश्वर के भवन के पात्र के साथ क्या किया?

आहाज ने पात्र को बटोरकर तुड़वा डाले और यहोवा के भवन के द्वारों को बन्द कर दिया।

2 इतिहास 28:24-25

यरूशलेम के सब कोनों में आहाज द्वारा अपने लिए वेदियाँ बनाने और यहूदा के एक-एक नगर में उसने पराए देवताओं को धूप जलाने के लिये ऊँचे स्थान बनाने का क्या परिणाम हुआ?

आहाज के कार्यों का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई।

2 इतिहास 28:26

आहाज के और काम कहाँ दर्ज हैं?

आहाज के और कामों और पूरी चाल चलन का वर्णन यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है।

2 इतिहास 28:27

आहाज की मृत्यु के बाद यरूशलेम में मिट्टी दी जाने पर कौन राज्य करने लगा?

आहाज का पुत्र हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 29:1-2

जब हिजकिय्याह ने पच्चीस वर्ष की आयु में राज्य करने लगा, तो उन्होंने किस उदाहरण का अनुसरण किया?

हिजकिय्याह ने जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था वैसा ही उसने भी किया।

2 इतिहास 29:3-5

हिजकिय्याह ने लेवियों से क्या कहा जब उन्होंने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिए और उनकी मरम्मत भी कराई?

हिजकिय्याह ने लेवियों से कहा कि वे अपने आप को पवित्र करें, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करें, और पवित्रस्थान में से मैल को दूर करें।

2 इतिहास 29:6

हिजकिय्याह ने कहा कि उनके पुरखाओं ने यहोवा की दृष्टि में क्या किया था?

हिजकिय्याह ने कहा कि उनके पुरखाओं ने विश्वासघात करके वह कर्म किया था, जो हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है

2 इतिहास 29:6-7

उनके पुरखाओं ने उस स्थान पर क्या नहीं किया जहाँ यहोवा निवास करते थे?

उनके पुरखाओं ने इस्राएल के परमेश्वर के पवित्रस्थान में न तो धूप जलाया और न होमबलि चढ़ाया था।

2 इतिहास 29:8

यहोवा के क्रोध के यहूदा और यरूशलेम पर भड़कने का परिणाम क्या हुआ?

यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का कि वे मारे-मारे फिरें और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो जाएँ।

2 इतिहास 29:9

यहोवा के क्रोध के कारण उनके बाप, बेटे-बेटियाँ और स्त्रियाँ कहाँ चली गई हैं?

उनके बाप तलवार से मारे गए, और उनके बेटे-बेटियाँ और स्त्रियाँ बँधुआई में चली गई हैं।

2 इतिहास 29:10

हिजकिय्याह ने यहोवा का भड़का हुआ क्रोध दूर करने के लिए क्या उपाय सुझाया?

हिजकिय्याह ने प्रस्ताव रखा कि वे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के साथ एक वाचा बाँधेंगे।

2 इतिहास 29:15

अपने भाइयों को इकट्ठा करने के बाद लेवियों ने क्या किया?

लेवियों ने अपने भाइयों को इकट्ठा किया और अपने-अपने को पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने यहोवा से वचन पाकर दी थी, यहोवा का भवन शुद्ध करने के लिये भीतर गए।

2 इतिहास 29:16

जब उन्होंने यहोवा के भवन को शुद्ध किया, तो लेवियों ने वहाँ मिली जितनी अशुद्ध वस्तुएँ क्या किया?

लेवियों ने सारी अशुद्ध वस्तुएँ उठाकर बाहर किद्रोन के नाले में पहुँचा दिया।

2 इतिहास 29:17

यहोवा के भवन को पवित्र करने में लेवियों को कितना समय लगा?

लेवियों ने पहले महीने के पहले दिन को उन्होंने पवित्र करने का काम आरम्भ किया और पहले महीने के सोलहवें दिन को उन्होंने उस काम को पूरा किया।

2 इतिहास 29:18–19

याजकों ने हिजकिय्याह को क्या बताया कि उन्होंने यहोवा के सारे भवन को शुद्ध करने के अलावा और क्या तैयार और पवित्र किया है?

यहोवा के पूरे भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी, और भेंट की रोटी की मेज को भी शुद्ध किया और जितने पात्र राजा आहाज ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिए थे, उनको भी उन्होंने ठीक करके पवित्र किया है।

2 इतिहास 29:20–21

हिजकिय्याह ने याजकों को यहूदा के लिए पापबलि के रूप में लाए गए पशुओं का क्या करने की आज्ञा दी?

हिजकिय्याह ने याजकों से यहोवा की वेदी पर पशुओं को चढ़ाने की आज्ञा दी।

2 इतिहास 29:22–24

याजकों ने पशुओं की बलि क्यों दी और उनका लहू वेदी पर क्यों छिड़का?

याजकों ने पशुओं की बलि किया और उनके लहू को वेदी पर छिड़का ताकि सभी इस्राएल के लिए प्रायश्चित किया जा सके। एक होमबलि और पापबलि सभी इस्राएल के लिए चढ़ाया जाना था।

2 इतिहास 29:25

लेवियों और उनके वाद्ययंत्रों को यहोवा के भवन में खड़ा करने का आज्ञा किसने दिया?

आज्ञा यहोवा के नबियों के द्वारा आई थी।

2 इतिहास 29:27–28

जब सारी मण्डली दण्डवत् कर रही थी और होमबलि चढ़ाना आरम्भ हो रहा था, तब गानेवाले और तुरही फूँकनेवाले फूँकते रहे और यह कितनी देर तक चलता रहा?

यह सब तब तक होता रहा, जब तक होमबलि चढ़ न चुकी हो।

2 इतिहास 29:30

जब लेवीय यहोवा की स्तुति में दाऊद और आसाप के भजन गा रहे थे, तो उनका रवैया कैसा था?

लेवियों ने आनन्द के साथ स्तुति की और सिर झुकाकर दण्डवत् किया।

2 इतिहास 29:31

मण्डली के लोगों ने यहोवा के भवन में क्या लाई?

मण्डली के लोगों ने मेलबलि और धन्यवाद-बलि पहुँचा दिए, और जितने अपनी इच्छा से देना चाहते थे उन्होंने भी होमबलि पहुँचाए।

2 इतिहास 29:32–33

मण्डली के लोगों ने होम बलि के लिए किन प्रकार के पशुओं को अर्पित किया?

मण्डली के लोगों ने होम बलि के लिए बैल, मेढ़े, भेड़-बकरियाँ और भेड़ के बच्चे लाए।

2 इतिहास 29:34

याजकों को लेवियों से होम बलिदानों की खाल उतारने में सहायता क्यों लेनी पड़ी?

याजकों को लेवियों से जलाए गए बलिदानों की खाल उतारने में सहायता करने के लिए कहना पड़ा क्योंकि वे सब होमबलि पशुओं की खालें न उतार सके।

2 इतिहास 29:35–36

जब यहोवा के भवन का काम शुरू हो गई तो हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग ने क्या किया?

तब हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग आनन्दित हुए।

2 इतिहास 30:1

हिजकिय्याह ने दूतों को कहाँ भेजा और पत्र किसे लिखे?

हिजकिय्याह ने सारे इस्राएल और यहूदा में दूतों को कहला भेजा, और एप्रैम और मनश्शे के पास पत्र लिख भेजे।

2 इतिहास 30:1 (#2)

हिजकिय्याह का संदेश उन्हें क्या बताता है?

संदेश ने उन्हें बताया कि उन्हें फसह मनाने के लिए यहोवा के भवन में यरूशलेम आना है।

2 इतिहास 30:2

वे कौन थे जिन्होंने दूसरे महीने में फसह मनाने के लिए सम्मति की?

राजा और उसके हाकिमों और यरूशलेम की मण्डली ने सम्मति की थी।

2 इतिहास 30:3

वे उसे उस समय फसह क्यों नहीं मना सकते थे?

वे उसे उस समय फसह का उत्सव नहीं मना सके, क्योंकि थोड़े ही याजकों ने अपने-अपने को पवित्र किया था, और प्रजा के लोग यरूशलेम में इकट्ठे न हुए थे।

2 इतिहास 30:4

यह बात राजा और सारी मण्डली को कैसी लगी?

यह बात राजा और सारी मण्डली को अच्छी लगी।

2 इतिहास 30:5

राजा और सारे इस्राएलियों ने क्या ठहरा दिया और निर्मित किया?

उन्होंने एक आदेश स्थापित किया और एक प्रचार किया।

2 इतिहास 30:5 (#2)

प्रचार कहाँ तक फैल गई?

बेर्शेबा से लेकर दान के सारे इस्राएलियों में यह प्रचार फैल गई।

2 इतिहास 30:5 (#3)

प्रचार में क्या कहा गया था?

प्रचार में कहा गया कि लोगों को यरूशलेम में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह मनाना था।

2 इतिहास 30:6

प्रचार किस माध्यम से की गई?

हरकारे राजा और उसके हाकिमों से चिट्ठियाँ लेकर, राजा की आज्ञा के अनुसार सारे इस्राएल और यहूदा में घूमे, और यह प्रचार किए।

2 इतिहास 30:9

प्रचार में कहा गया था कि यदि लोग यहोवा की ओर फिरेंगे तो क्या होगा?

भाइयों और बच्चों को उन लोगों के सामने दया प्राप्त होगी जिन्होंने उन्हें बन्दी बना लिया था, और वे इस्राएल में लौट सकेंगे।

2 इतिहास 30:10

हरकारे कहाँ गए और लोगों ने कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त की?

हरकारे एप्रैम और मनश्शे के देशों में नगर-नगर होते हुए जबूलून तक गए; परन्तु लोगों ने उनकी हँसी की, और उन्हें उपहास में उड़ाया।

2 इतिहास 30:11

किसने स्वयं को दीन किया और उन्होंने क्या किया?

आशेर, मनश्शे और जबूलून में से कुछ लोग दीन होकर यरूशलेम को आए।

2 इतिहास 30:12

परमेश्वर की शक्ति ने क्या किया और क्या घटित हुआ?

परमेश्वर की शक्ति यहूदा पर आया और वे एक मन होकर उसे मानने को तैयार हुए।

2 इतिहास 30:13

दूसरे महीने में अख़मीरी रोटी के पर्व को मनाने के लिए यरूशलेम में कितने लोग इकट्ठे हुए?

अधिक लोग, और बहुत बड़ी सभा यरूशलेम में इकट्ठी हो गई।

2 इतिहास 30:14–15

यरूशलेम में इकट्ठे हुए लोगों ने क्या किया?

उन्होंने धूप के लिए सभी वेदियाँ उठाकर किद्रोन नाले में फेंक दिया। फिर दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्होंने फसह के पशुबलि किए।

2 इतिहास 30:15

जो याजक और लेवीय लज्जित हुए, उन्होंने क्या किया?

उन्होंने अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आए।

2 इतिहास 30:16

वे कैसे खड़े हुए और याजकों ने क्या किया?

वे मूसा की व्यवस्था के अनुसार, अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए, और याजकों ने रक्त को छिड़क दिया।

2 इतिहास 30:17

याजकों ने लेवियों से प्राप्त रक्त क्यों छिड़का?

क्योंकि सभा में बहुत ऐसे थे जिन्होंने अपने को पवित्र न किया था; इसलिए सब अशुद्ध लोगों के फसह के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवियों को दिया गया, और याजकों ने रक्त छिड़कने से यह उनसे प्राप्त किया।

2 इतिहास 30:18–19

हिजकिय्याह ने एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार, और जबूलून के लोगों के लिए प्रार्थना क्यों की, और उन्होंने किसके लिए प्रार्थना की?

बहुतों ने अपने को शुद्ध नहीं किया था, तो भी वे फसह के पशु का माँस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। इसलिए हिजकिय्याह ने यहोवा से प्रार्थना की कि यहोवा जो भला है, वह उन सभी के पाप ढाँप दे जो परमेश्वर की खोज में मन लगाए हुए हैं, चाहे वे पवित्रस्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों।

2 इतिहास 30:20

यहोवा ने प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया?

यहोवा ने हिजकिय्याह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया।

2 इतिहास 30:21

इस्राएल के लोगों, लेवियों, और याजकों ने क्या किया?

लोग सात दिन तक अख़मीरी रोटी का पर्व बड़े आनन्द से मनाते रहे। लेवीय और याजक शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे।

2 इतिहास 30:22

हिजकिय्याह ने यहोवा की सेवा करने वाले लेवियों से कैसे बात की, और उन्होंने क्या किया?

हिजकिय्याह ने उनको शान्ति के वचन कहे और उन्होंने सात दिनों तक पर्व के दौरान खाते रहे, मेलबलि चढ़ाए, और यहोवा के सामने अंगीकार किए।

2 इतिहास 30:23–24

जब हिजकिय्याह ने सारी सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़-बकरियाँ दे दीं,और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़-बकरियाँ दीं, तो पूरी सभा ने क्या करने की सम्मति की?

सारी सभा ने सम्मति की कि वे और सात दिन पर्व मानेंगे; अतः उन्होंने और सात दिन आनन्द से पर्व मनाया।

2 इतिहास 30:25

पर्व में आनंदित होने वाले सभी लोग कौन थे?

याजकों और लेवियों समेत यहूदा की सारी सभा, और इस्राएल से आए हुओं की सभा, और इस्राएल के देश से आए हुए, और यहूदा में रहनेवाले परदेशी, इन सभी ने आनन्द किया।

2 इतिहास 30:26

पर्व का वर्णन कैसे किया गया था?

यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी।

2 इतिहास 30:27

पर्व में आगे लेवीय याजकों ने क्या किया?

उन्होंने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुँची।

2 इतिहास 31:1

इस्राएलियों ने अख़मीरी रोटी का पर्व मनाने के बाद क्या किया?

इस्राएल के लोग यहूदा के नगरों में गए, और सारे यहूदा और बिन्यामीन और एप्रैम और मनश्शे में की लाठों को तोड़ दिया, अशेरों को काट डाला, और ऊँचे स्थानों और वेदियों को गिरा दिया; और उन्होंने उन सब का अन्त कर दिया।

2 इतिहास 31:1 (#2)

इस्राएल के लोग यह करने के बाद कहाँ पहुँचे?

इस्राएली अपने-अपने नगर को लौटकर, अपनी-अपनी निज भूमि में पहुँचे।

2 इतिहास 31:2

हिजकिय्याह ने याजकों को और लेवियों को प्रति दल के अनुसार क्या करने के लिए ठहरा दिया?

हिजकिय्याह ने उन्हें यहोवा की छावनी के द्वारों के भीतर होमबलि, मेलबलि, सेवा टहल, धन्यवाद और स्तुति करने के लिए ठहरा दिया।

2 इतिहास 31:3

हिजकिय्याह ने किसे राजभाग ठहरा दिया और यह कब के लिए था?

यह राजभाग राजा की अपनी सम्पत्ति से होना था, और सवेरे और साँझ की होमबलि और विश्राम और नये चाँद के दिनों और नियत समयों की होमबलि के लिए थे।

2 इतिहास 31:4

हिजकिय्याह ने यरूशलेम में रहनेवालों को क्या करने की आज्ञा दी ताकि याजकों और लेवियों को यहोवा की व्यवस्था के काम मन लगाकर कर सकें?

हिजकिय्याह ने यरूशलेम में रहनेवालों को याजकों और लेवियों को उनका भाग देने की आज्ञा दी।

2 इतिहास 31:5

जब लोगों को आज्ञा दिया गया, तब क्या हुआ?

इस्राएली अन्न, नया दाखमधु, टटका तेल, मधु आदि खेती की सब भाँति की पहली उपज बहुतायत से देने, और सब वस्तुओं का दशमांश अधिक मात्रा में लाने लगे।

2 इतिहास 31:6

यहूदा के नगरों के लोगों ने आज्ञा के प्रति क्या प्रतिक्रिया दी?

यहूदा के नगरों के लोगों बैलों और भेड़-बकरियों का दशमांश, और उन पवित्र वस्तुओं का दशमांश, जो उनके परमेश्वर यहोवा के निमित्त पवित्र की गई थीं, लाकर ढेर-ढेर करके रखने लगे।

2 इतिहास 31:7

वे कौन से महीने थे जब लोगों ने ढेर लगाए थे?

ढेर का लगाना लोगों ने तीसरे महीने में आरम्भ किया और सातवें महीने में पूरा किया।

2 इतिहास 31:8

जब लोगों ने ढेर देखे, तो उन्होंने यहोवा और प्रजा इस्राएल को किसने धन्य-धन्य कहा?

हिजकिय्याह और हाकिमों ने आकर यहोवा को और उसकी प्रजा इस्राएल को धन्य-धन्य कहा।

2 इतिहास 31:9–10

जब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवियों से ढेरों के विषय पूछा, तो महायाजक अजर्याह ने क्या कहा?

अजर्याह ने कहा कि जब से लोग भेंटें लाने लगे हैं, तब से वे लोग पेट भर खाने को पाते हैं, वरन् बहुत बचा भी करता है; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को आशीष दी है, और जो शेष रह गया है, उसी का यह बड़ा ढेर है।

2 इतिहास 31:11–12

हिजकिय्याह ने क्या तैयार करने करने की आज्ञा दी और लोगों ने क्या किया?

हिजकिय्याह ने यहोवा के भवन में कोठरियाँ तैयार करने की आज्ञा दी, और वे तैयार की गईं। तब लोगों ने उठाई हुई भेंटें, दशमांश और पवित्र की हुई वस्तुएँ, सच्चाई से पहुँचाईं।

2 इतिहास 31:12

हिजकिय्याह और अजर्याह ने कोठरियों के मुख्य अधिकारी के रूप में किसे नियुक्त किया था?

हिजकिय्याह और अजर्याह ने कोनन्याह को मुख्य अधिकारी के रूप में नियुक्त किया और कोनन्याह के भाई शिमी को सहायक अधिकारी के रूप में नियुक्त किया।

2 इतिहास 31:16

कोरे और उनके साथियों ने भेंट किसे बाँटा?

उन्होंने उन पुरुषों की वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन वर्ष की अवस्था के या उससे अधिक आयु के थे, और अपने-अपने दल के अनुसार अपनी-अपनी सेवा के कार्य के लिये प्रतिदिन के काम के अनुसार यहोवा के भवन में जाया करते थे, उन्हें बाँट दी।

2 इतिहास 31:17

अगला भेंट पाने वालों में कौन गिना गया?

उन्होंने लेवियों को भी गिना जो बीस वर्ष की अवस्था से ले आगे को अपने-अपने दल के अनुसार, अपने-अपने काम करते थे।

2 इतिहास 31:18

कोरे और उनके साथियों से भेंट प्राप्त करने से पहले लोगों ने क्या किया था?

लोगों ने बाँटने से पहले अपने सभी बाल-बच्चों, स्त्रियों, बेटों और बेटियों को भी दें, जिनकी वंशावली थी, क्योंकि वे सच्चाई से अपने को पवित्र किए।

2 इतिहास 31:19

उन याजकों के लिए क्या किया गया जो लेवियों की वंशावलियों में गिने गए थे?

कुछ पुरुष नियुक्त किए गए थे कि वे उन सब पुरुषों को उनका भाग दें जो अपने-अपने नगरों के चराईवाले मैदान में रहते थे।

2 इतिहास 31:20

हिजकिय्याह ने यह कार्य कहाँ और कैसे प्रबन्ध किया?

हिजकिय्याह ने सारे यहूदा में यह कार्य प्रबन्ध किया, और जो कुछ उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक और सच्चाई का था, उसे वह करता था।

2 इतिहास 31:21

हिजकिय्याह ने जो-जो काम किया वह किस प्रकार किया, और उसका परिणाम क्या हुआ?

हिजकिय्याह ने जो-जो काम किया वह सारा मन लगाकर किया, और उसमें सफल भी हुआ।

2 इतिहास 32:1

सन्हेरीब, अश्शूर के राजा ने यहूदा के साथ क्या किया?

वे यहूदा में प्रवेश कर और गढ़वाले नगरों के विरुद्ध डेरे डालकर उनको अपने लाभ के लिये लेना चाहा।

2 इतिहास 32:2–4

हिजकिय्याह ने अपने हाकिमों से किससे मदद की सम्मति की?

उन्होंने उनसे कहा कि सब सोतों और नदी को सुखा दें ताकि अश्शूर के राजा को पानी न मिले।

2 इतिहास 32:5

हिजकिय्याह ने शत्रु के हमले से बचाव के लिए क्या उपाय किए?

उन्होंने शहरपनाह बनवाया और बहुत से हथियार और ढालें भी बनवाईं।

2 इतिहास 32:6–8

हिजकिय्याह ने अपने लोगों को कौन से उत्साहवर्धक शब्द कहे?

उसने उनसे कहा कि वे दृढ़ रहें, हियाव बाँधें और डरें नहीं क्योंकि यहोवा, जो उनके संगियों से बड़ा है, उन्हें युद्ध करने में सहायता करेंगे।

2 इतिहास 32:9–10

सन्हेरीब ने अपने अपने कर्मचारियों को यरूशलेम क्यों भेजा?

वह जानना चाहता था कि हिजकिय्याह किस पर विजय के लिए भरोसा कर रहे थे।

2 इतिहास 32:11

सन्हेरीब ने लोगों को कैसे यकीन दिलाने की कोशिश की कि हिजकिय्याह उन्हें भरमाता है?

उन्होंने कहा कि वे भूखा प्यासा से मर सकते हैं और पूछा कि क्या यहोवा उन्हें बचाएंगे।

2 इतिहास 32:13–14

सन्हेरीब और उनके पुरखाओं ने अदेश-देश के सब लोगों के साथ क्या किया था?

क्योंकि उन देशों की जातियों के देवता उनकी सहायता नहीं कर सके, वे पूरी तरह से सत्यानाश हो गए।

2 इतिहास 32:14–15

सन्हेरीब ने क्यों कहा कि इस्राएलियों को हिजकिय्याह पर विश्वास नहीं करना चाहिए?

सन्हेरीब लोगों को यह विश्वास दिलाना चाहता था कि परमेश्वर उन्हें उनके हाथ से नहीं बचाएँगे।

2 इतिहास 32:16–17

सन्हेरीब ने यहोवा की निन्दा कैसे की?

उसने ऐसा एक पत्र भेजा, जिसमें इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की बातें लिखी थीं, यरूशलेम के लोगों को अतीत की याद दिलाने के लिए, और यह कि हिजकिय्याह का परमेश्वर उन्हें नहीं बचा सकेंगे।

2 इतिहास 32:18

सन्हेरीब के कर्मचारियों ने यहूदी बोली में यरूशलेमियों से क्यों बात की?

कर्मचारियों ने लोगों को डराकर घबराहट में डालना चाहते थे ताकि वे नगर को अपने कब्जे में ले लें।

2 इतिहास 32:20–21

जब हिजकिय्याह और यशायाह ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर दुहाई दी, तो यहोवा ने किस प्रकार प्रतिक्रिया दी?

यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिसने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों, प्रधानों और सेनापतियों को नष्ट किया।

2 इतिहास 32:21

स्वर्गदूत द्वारा उसकी सेना को मारने के बाद सन्हेरीब का क्या हुआ?

सन्हेरीब लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया, जहाँ उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला।

2 इतिहास 32:22–23

हिजकिय्याह को कैसे महान ठहराया?

यहोवा ने हिजकिय्याह को सन्हेरीब और अपने सब शत्रुओं के हाथ से बचाया। यहोवा और हिजकिय्याह के लिए कई लोगों ने भेंट और अनमोल वस्तुएँ लाए।

2 इतिहास 32:24–26

जब हिजकिय्याह ने यहोवा को गंभीर बीमारी से चंगा होने के उपकार का बदला न दिया, तो उसके साथ क्या हुआ?

परमेश्वर काकोप उस पर और यहूदा और यरूशलेम पर भड़का। जब उन्होंने और यरूशलेम के निवासियों समेत अपने मन के फूलने के कारण दीन हुए, तो यहोवा का क्रोध उन पर हिजकिय्याह के दिनों में न भड़का।

2 इतिहास 32:27–29

हिजकिय्याह के स्वयं को दीन करने के बाद परमेश्वर ने उन्हें क्या प्रदान किया?

परमेश्वर ने उन्हें प्रचुर मात्रा में कीमती मणियों, अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल के लिये भण्डार, और सब भाँति के पशुओं और नगरों को बसाकर बहुत आशीष दिए।

2 इतिहास 32:30–31

परमेश्वर ने हिजकिय्याह को उसकी सब कामों में सफल होने के बाद अकेला क्यों छोड़ दिया?

परमेश्वर ने उसको इसलिए छोड़ दिया, कि उसको परखकर उसके मन का सारा भेद जान ले।

2 इतिहास 32:32

हिजकिय्याह के भक्ति के काम कहाँ पर लिखे गए हैं?

वे यशायाह नबी के दर्शन नामक पुस्तक में, और यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

2 इतिहास 33:1–3

मनश्शे पचपन वर्षों तक किस प्रकार राज्य करता रहा?

उसने यहोवा की दृष्टि में बुरे कार्य किए, उसने उन ऊँचे स्थानों को जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ दिया था, फिर बनाया, और आकाश के सारे गणों को दण्डवत् करता, और उनकी उपासना करता रहा।

2 इतिहास 33:6

उन्होंने परमेश्वर को क्रोधित करने के लिए क्या किया?

मनश्शे ने अपने बेटों को होम करके चढ़ाया, टोना किया, और ओझों और भूत सिद्धिवालों से सम्बंध रखता था।

2 इतिहास 33:7

मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों को भ्रष्ट करने के लिए क्या किया?

उसने अपनी खुदवाई हुई मूर्ति परमेश्वर के उस भवन में स्थापित करके आज्ञाओं का उल्लंघन किया।

2 इतिहास 33:10–11

जब यहोवा ने मनश्शे और प्रजा से बातें कीं, तो मनश्शे के साथ क्या हुआ?

क्योंकि उन्होंने ध्यान नहीं दिया, यहोवा ने उन पर अश्शूर के सेनापतियों से चढ़ाई कराई, और वे मनश्शे को नकेल डालकर, और पीतल की बेड़ियों से जकड़कर, उसे बाबेल को ले गए।

2 इतिहास 33:12–13

मनश्शे ने ऐसा क्या किया कि परमेश्वर उन्हें यरूशलेम वापस लौटा दिया?

उन्होंने स्वयं को दीन किया, प्रार्थना की, और परमेश्वर से विनती की।

2 इतिहास 33:14–15

मनश्शे ने प्रार्थना करने के बाद, अपने पछतावे को दिखाने के लिए कौन से कदम उठाए?

उन्होंने यहूदा के चारों ओर एक शहरपनाह बनवाई और पराए देवताओं को दूर दिया, उस मूर्ति को भी जो उन्होंने यहोवा के भवन में रखी थी, और जितनी वेदियाँ जो उन्होंने बनाई थीं उन्हें भी बाहर फेंकवा दिया।

2 इतिहास 33:17

लोगों ने ऊँचे स्थानों पर किसका बलिदान चढ़ाया?

उन्होंने केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिए ऊँचे स्थानों पर बलिदान करते रहे।

2 इतिहास 33:18

मनश्शे के और काम, और प्रार्थना कैसे सुरक्षित रखे गए?

मनश्शे के और काम, प्रार्थना, और उन दर्शियों के वचन, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास में लिखा हुआ है।

2 इतिहास 33:21–23

अपने दो साल के राज्य के दौरान आमोन कैसे राजा थे?

अपने पिता मनश्शे के समान वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना की, और उसने यहोवा के सामने स्वयं को दीन नहीं किया।

2 इतिहास 33:24

राजा आमोन के कर्मचारियों द्वारा उसे मार डालने के बाद, देश के लोगों ने उसके हत्यारों के साथ क्या किया?

भूमि के लोगों ने उन सभी कर्मचारियों को मार डाला जिन्होंने राजा आमोन को मारा।

2 इतिहास 34:1–3

जब योशिय्याह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, उन्होंने अपने राज्य के दौरान यहोवा को प्रसन्न करने के लिए क्या किया?

उन्होंने परमेश्वर की खोज की और यहूदा तथा यरूशलेम में ऊँचे स्थानों, मूरतों और खुदी और ढली हुई मूरतों को दूर करके शुद्ध करने लगा।

2 इतिहास 34:4–5

योशियाह ने यहूदा और यरूशलेम को कैसे शुद्ध किया?

उन्होंने बाल देवताओं की वेदियाँ उसके सामने तोड़ दिया, और सूर्य की प्रतिमाएँ जो उनके ऊपर ऊँचे पर थीं, उसने काट डाली, और अशेरा नामक, और खुदी और ढली हुई मूरतों को उसने तोड़कर पीस डाला और उनकी बुकनी उन लोगों की कब्रों पर छितरा दी। उनके पुजारियों की हड्डियाँ उसने उन्हीं की वेदियों पर जलाईं।

2 इतिहास 34:6–7

योशियाह ने यरूशलेम लौटने से पहले इस्राएल के सारे देश में क्या किया?

उन्होंने वही शुद्धिकरण दोहराया जो उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में किया था।

2 इतिहास 34:8–9

परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत के लिए रुपया कहाँ से आया?

यरूशलेम के लोगों से रुपया इकट्ठा किया गया था और उसे महायाजक को सौंप दिया गया था।

2 इतिहास 34:10–11

रुपये किसे सौंप दिया गया और उनका उपयोग किस उद्देश्य के लिए किया गया?

बढ़इयों और राजमिस्त्रियों ने मंदिर भवन के मरम्मत के लिए पत्थर और लकड़ी मोल लिया।

2 इतिहास 34:12–13

लेवियों ने भवन की मरम्मत में कौन-कौन सी भूमिकाएँ निभाईं?

कुछ काम चलानेवाले, बोझियों के अधिकारी, मुंशी सरदार, और दरबान थे; अन्य गाने-बजाने का भेद सब जाननेवाले और

भाँति-भाँति की सेवा और काम चलानेवाले का मार्गदर्शन करते थे।

2 इतिहास 34:14

जब याजक ने यहोवा के भवन में पहुँचाए गए रुपये बाहर निकाले, तो उन्हें क्या मिला?

याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली।

2 इतिहास 34:19

व्यवस्था की वे बातें सुनने के बाद राजा ने क्या किया?

व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े।

2 इतिहास 34:25

लोगों पर परमेश्वर का क्रोध क्यों भड़क उठी है और क्यों शान्त न होगी?

उन्होंने पराए देवताओं के लिये धूप जलाके परमेश्वर को त्याग दिया है, जैसा कि उनके पुरखाओं ने किया था।

2 इतिहास 34:26–28

क्योंकि योशियाह दीन हुआ और जब उन्होंने परमेश्वर के बातें सुने, तो अपना सिर झुकाया, तब क्या हुआ?

परमेश्वर ने कहा कि वे उसे शान्ति देंगे, और वह उन विपत्ति को अपनी आँखों से नहीं देखेगा जो परमेश्वर इस स्थान पर, और इसके निवासियों पर लाएंगे।

2 इतिहास 34:29–30

योशियाह ने सब लोगों, छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को एक साथ क्यों इकट्ठा किया?

योशियाह ने उन्हें वाचा की पुस्तक की सारी बातें पढ़कर सुनाई।

2 इतिहास 34:31–32

योशियाह ने यहोवा के साथ कौन-सी वाचा बाँधी?

उन्होंने यहोवा के सामने उनके आज्ञाओं का पालन करने की वाचा बाँधी।

2 इतिहास 34:33

इस्राएल के लोगों ने योशियाह की आज्ञा का पालन किस प्रकार किया?

उन्होंने यहोवा की उपासना की और उनके पीछे चलना न छोड़ा।

2 इतिहास 35:1–2

योशियाह ने यरूशलेम में फसह कैसे माना?

उन्होंने फसह का पशुबलि किया और यहोवा के भवन में याजकों को अपने-अपने काम में ठहराया।

2 इतिहास 35:3

योशियाह ने लोगों से कहा कि वे पवित्र सन्दूक को अपने कंधों पर उठाने के बजाय कहाँ रखें?

उन्हें बताया गया कि पवित्र सन्दूक को उस भवन में रखें जो सुलैमान ने बनवाया था।

2 इतिहास 35:6

लोगों को फसह के लिए कैसे तैयारी करनी चाहिए थी?

लोगों को फसह के पशुओं को बलि करना था और यहोवा के वचन के अनुसार अपने-अपने को पवित्र करना था।

2 इतिहास 35:11–12

इस्राएल के लोगों ने यहोवा को अपने बलिदान कैसे चढ़ाया?

उन्होंने फसह के पशु को मारा, लहू छिड़का, पशु की खाल उतारते गए, और यहोवा को होमबलि चढ़ाई, जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है।

2 इतिहास 35:16–17

फसह के पर्व को मनाने के बाद इस्राएल के लोगों ने क्या किया?

उन्होंने अख़मीरी रोटी के पर्व को सात दिन तक माना।

2 इतिहास 35:18

इस फसह का पर्व इतना विशेष क्यों था?

यह विशेष था क्योंकि इस फसह के बराबर शमूएल नबी के दिनों से इस्राएल में कोई फसह मनाया न गया था।

2 इतिहास 35:20–21

मिस्र के राजा ने योशिय्याह को क्या संदेश भेजा?

उन्होंने कहा कि परमेश्वर ने उन्हें कर्कमीश के खिलाफ फुर्ती करने को कहा है और योशिय्याह को हउससे अलग रहने को कहा।

2 इतिहास 35:22

योशिय्याह ने मिस्र के राजा के संदेश पर क्या प्रतिक्रिया दी?

उन्होंने राजा के शब्दों पर मुँह न मोड़ा, बल्कि इसके बजाय, योशिय्याह लड़ने के लिये भेष बदला।

2 इतिहास 35:23–24

युद्ध के मैदान में योशिय्याह के साथ क्या हुआ?

धनुर्धारियों ने राजा योशिय्याह की ओर तीर छोड़े और घायल किए और उसके सेवक उसे यरूशलेम ले गए, वहाँ वह मर गया।

2 इतिहास 35:25

इस्राएल में जो विलाप का गीत प्रचलित हो गए हैं, वे कौन से हैं?

ये वे गीत हैं जो योशिय्याह के लिए विलाप करने हेतु गाए गए थे और आज तक गाए जाते हैं।

2 इतिहास 35:26–27

योशिय्याह के और काम और भक्ति के जो काम का वर्णन कहाँ दर्ज है?

उसके सब काम इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

2 इतिहास 36:1–2

योशिय्याह के निधन के बाद, यरूशलेम का राजा कौन बना?

देश के लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसके पिता के स्थान पर यरूशलेम में राजा बनाया, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।

2 इतिहास 36:3–4

एलयाकीम यहूदा और यरूशलेम के राजा कैसे बने?

मिस्र के राजा ने उसको यरूशलेम में राजगद्दी से उतार दिया और उसने भाई एलयाकीम को यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा।

2 इतिहास 36:5

ग्यारह वर्षों के राज्य में यहोयाकीम किस प्रकार के शासक थे?

उसने वह काम किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

2 इतिहास 36:6

बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा के राजा के साथ क्या किया?

उन्होंने उस पर हमला किया, उन्हें पीतल की बेड़ियाँ पहना दीं, और उन्हें बाबेल ले गए।

2 इतिहास 36:7

नबूकदनेस्सर ने यहोवा के भवन के साथ क्या किया?

उन्होंने यहोवा के भवन के कुछ पात्र बाबेल ले जाकर, अपने मन्दिर में जो बाबेल में था, रख दिए।

2 इतिहास 36:8

यहोयाकीम के बाद कौन राजा बने?

उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 36:9

यहोयाकीन किस प्रकार के राजा थे?

अपने छोटे शासनकाल में, उसने वह किया, जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

2 इतिहास 36:10

राजा नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीन के साथ कैसा व्यवहार किया?

उन्होंने यहोयाकीन को बाबेल ले गए और यहोवा के भवन के मनभावने पात्रों को बाबेल में मँगवा लिया।

2 इतिहास 36:12

सिदकिय्याह ने यहोवा को क्या उत्तर दिया?

उन्होंने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और उन्होंने यिर्मयाह नबी के सामने, जो यहोवा की ओर से बातें बोलते थे, दीन न हुआ।

2 इतिहास 36:13

सिदकिय्याह ने राजा नबूकदनेस्सर के विरुद्ध बलवा क्यों किया?

उन्होंने यहोवा के खिलाफ अपना मन कठोर किया और राजा नबूकदनेस्सर के विरुद्ध बलवा किया।

2 इतिहास 36:15–16

यहोवा ने जो तरस उन पर खाई, उस पर लोगों ने कैसे प्रतिक्रिया दी?

उन्होंने परमेश्वर के दूतों का उपहास किया, उनके वचनों को तुच्छ जाने, और उनके नबियों की हँसी करते थे।

2 इतिहास 36:17

परमेश्वर ने उपहास करने वालों के साथ क्या किया?

उन्होंने जवानों को कसदियों के राजा द्वारा तलवार से मार डाला, और शेष सभी को राजा के हाथ में कर दिया।

2 इतिहास 36:18–19

बाबेल के राजा ने यरूशलेम के साथ क्या किया और वह बाबेल क्या ले गए?

उन्होंने परमेश्वर के भवन फूँक दिया, यरूशलेम की शहरपनाह को तोड़ डाला, उऔर आग लगाकर उसके सब भवनों को जलाया, और उसमें का सारा बहुमूल्य सामान नष्ट कर दिया। फिर वे सब पात्र और खजाने को बाबेल ले गए।

2 इतिहास 36:20–21

जो लोग तलवार से बच गए, उनके साथ क्या हुआ?

वे राजा और उसके बेटों-पोतों के अधीन रहे, जिससे यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था, वह पूरे हुए।

2 इतिहास 36:22–23

फारस के राजा कुस्रू ने क्या घोषणा की और उसे लिखित रूप में कैसे प्रस्तुत किया?

उन्होंने कहा कि यहोवा ने उन्हें यरूशलेम में परमेश्वर का एक भवन बनाने का आज्ञा दिया था, और जब वे भूमि पर जाएंगे, तो परमेश्वर उनके साथ होंगे।